अगस्त 2019

दादावाणी

Retail Price ₹ 15

पहले हमें हीरा बा के साथ बहुत मतभेद हो जाता था क्योंकि नासमझी थी न! बाद में अनुभव हुआ कि यह गलत कर रहे हैं। हमें ऐसा शोभा नहीं देता। घर के लोगों को दुःख क्यों दे? बाद में उनके साथ ठीक हो गया। हमें यदि मोक्ष में जाना है तो हमारी गरज़ से उनके प्रतिक्रमण करने पड़ेंगे न!

वर्ष : 14 अंक : 10
अखंड क्रमांक : 166
अगस्त 2019
पृष्ठ - 32

Editor : Dimple Mehta
© 2019
Dada Bhagwan Foundation.
All Rights Reserved

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
15 साल
भारत : 1500 रुपये
यू.एस.ए. : 150 डॉलर
यू.के. : 120 पाउन्ड
वार्षिक
भारत : 150 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 12 पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

दादा खोलें अपनी 'भूल पोथी'

संपादकीय

इस संसार में खुद किससे बंधा हुआ है? दु:ख क्यों भुगतने पड़ते हैं? शांति कैसे मिल सकती है? मुक्ति कैसे प्राप्त कर सकते हैं? परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) कहते हैं कि 'इस संसार में हमें अपनी भूलों की वजह से ही बंधन है। इस संसार में हमें किसी चीज़ ने नहीं बाँधा है। हम खुद के ब्लन्डर्स और मिस्टेक की वजह से ही बंधे हुए हैं!' अर्थात् खुद के स्वरूप की अज्ञानता ही सर्व भूलों का मूल है और परिणाम स्वरूप अनंत भूलें होती ही रहती हैं।

दादाश्री बताते हैं कि इस ज्ञान का अविर्भाव होने से पहले हमारे भीतर भी क्रोध-मान-माया-लोभ व राग-द्वेष थे और इनमें से भी विशेष रूप से मान का ही ज़ोर था। इस मान में सब से ज़्यादा 'मैं कुछ हूँ', का रोग था। खुद के पास कुछ नहीं था, कोई बरकत नहीं थी फिर भी बस, मान बैठे थे, इतना ही। यह पगला अहंकार मार देता है, अपने आपको बहुत नुकसान पहुँचाता है। घर वाले भी दु:खी होते हैं और खुद भी दु:खी होता है।

प्रस्तुत अंक में दादाश्री द्वारा, ज्ञान से पहले उनके अहंकार से हुई भूलें और ज्ञान के बाद उनकी खटपट, कठोर वाणी, जहाँ स्याद्वाद चूक गए हों, ऐसी घटनाओं को एकत्रित किया गया है। इस संकलन के पीछे मुख्य आशय यही है कि दादाश्री के जीवन की जिन घटनाओं से हम परिचित हैं उन्हीं घटनाओं को एक विशिष्ट दृष्टि से देखने की अभिरुचि अपने में खिल जाए।

दादाश्री ने अपने खुद के जीवन की किताब को खोलकर, व्यवहार में हुई सारी भूलें महात्माओं को बता दी हैं, यों खुद आलोचना व प्रतिक्रमण करके अपनी भूलों से मुक्त हो गए! ऐसे महान ज्ञानी पुरुष अपनी भूलों को सभी को बता देते हैं, कहीं भी सीक्रिसी नहीं दिखाई देती, वह हकीकत वास्तव में प्रशंसनीय है। उन्होंने क्या भूलें की? किस तरह से वे भूलों में से बाहर निकलें और भूलों से मुक्त हो गए, क्या बोध लिया और उस जागृति को ज़िंदगी भर हाज़िर रखकर, फिर कभी भी उन भूलों को रिपीट नहीं होने दिया। यों समझदारी से पुरुषार्थ करके खुद शुद्ध हो गए और मोक्ष के लायक बन गए।

दादाश्री कहते हैं, 'ज्ञानी जैसा करें, वैसा नहीं करना है लेकिन जैसा वे कहें वैसा करना है।' यानी कि हमें उनके जीवन में हुई भूलों का अनुकरण नहीं करना है लेकिन ऐसी भूलें हम से न हों ऐसी जागृति रखकर हमेशा के लिए भूल रहित हो जाना है, तभी मोक्षमार्ग पूरा होगा। जब खुद अपने आपके लिए निष्पक्षपाती बनेगा तब अपनी सारी भूलों को देख सकेगा। यहाँ पर दादाश्री महात्माओं को यह बोध दे जाते हैं कि जीवन में खुद की भूलों को पहचानों, उनके लिए पश्चाताप करके भूलों से मुक्त हो जाओ और जब वे भूलें खत्म हो जाएँगी तब यहीं पर स्व-सत्ता का अनुभव होगा।

- जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

दादा खोलें अपनी 'भूल पोथी'

मान का ही साम्राज्य

प्रश्नकर्ता : दादा, पूर्व जन्म के आपके इतने अच्छे कर्म थे, फिर भी आपको क्यों इतनी उम्र में ज्ञान हुआ? पहले क्यों नहीं हो गया?

दादाश्री : ऐसा है न, हमारा मोहनीय कर्म टूटने पर ही ज्ञानावरण टूट सकता था। ज्ञान का आवरण कब टूटता है? मोहनीय कर्म खत्म होने के बाद। हमें किस चीज़ का मोह था? हमें किसी प्रकार का मोह नहीं था। पैसों का या विषय का कोई मोह नहीं था। सिर्फ मान का ही मोह!

प्रश्नकर्ता : हाँ। यह समझाइए न! 1958 में आपमें ज्ञान का अविर्भाव हुआ, उससे पहले की आपकी आंतरिक स्थिति के बारे में ज़रा विस्तारपूर्वक समझाइए न!

दादाश्री : हाँ, ज्ञान का अविर्भाव होने से पहले क्रोध-मान-माया-लोभ व राग-द्वेष और उनमें भी विशेष रूप से मान का ज़ोर था, साम्राज्य ही मान का था और उसी के आधार पर बाकी के कषायों जी रहे थे। मान का ही ज़ोर! अभिमान का ज़ोर नहीं। अभिमान तो, जब ममता हो तब अभिमान होता है। यह तो ममता रहित मान!

प्रश्नकर्ता : ममता रहित मान कैसा होता है?

दादाश्री : 'मैं ही, मैं ही कुछ हूँ, मैं ही कुछ हूँ, ऐसा।'

प्रश्नकर्ता : वह तो ममता कहलाती है।

दादाश्री : नहीं। ममता तो दूसरी चीज़ है। 'यह मेरा है,' उसे अभिमान कहते हैं। 'यह मेरा है, यह कितना अच्छा है, यह मेरा है,' उसे अभिमान कहते हैं और मान क्या है? 'मैं' का ही बहुवचन, उसे मान कहते हैं। मान तो रहता है। उसमें हर्ज नहीं है। अभिमान, ममता को प्रदर्शित करता है। जब ममता हो तभी अभिमान होता है। ममता का लक्षण शुरू से मुझ में कम ही था, बिल्कुल ही कम! इस मान का ही था कि ''मैं कुछ हूँ,' सभी लोगों से बढ़कर 'मैं कुछ हूँ,'' वह सब गलत था। कोई बरकत नहीं थी। बस, मान बैठे थे, इतना ही।

मैं 'ज्ञान' से पहले के जीवन की बात कर रहा हूँ, क्रोध-मान-माया-लोभ, वे सब मान के 'अन्डरहैन्ड' बनकर रहते थे और ममता का गुण शुरू से था ही नहीं।

वह मुख्य गुण अच्छा था, उसी का प्रताप है यह! और ममता वाला सौ गुना सयाना हो तो भी संसार में ही गहरा उतरा रहता है। हम ममता रहित थे इसलिए वास्तव में मज़ा आया। ममता ही संसार है, अहंकार संसार नहीं है।

प्रश्नकर्ता : फिर भी यह 'ज्ञान' प्रकट हो गया, यह तो बहुत बड़ी बात है!

दादाश्री : 'ज्ञान' प्रकट हो गया क्योंकि

भीतर शुद्ध था न! दिक्कत इस अहंकार की ही थी, ममता नहीं थी इसलिए यह दशा मिली! ज़रा भी ममता नहीं, लालच नहीं लेकिन किसी ने मेरा नाम लिया कि उसकी आ बनी। इसलिए कई लोग तो मेरी पीठ पीछे ऐसा कहते थे, 'इसे बहुत घमंड है' और कई लोग कहते थे कि, 'अरे! जाने दो न, तुंड मिजाज़ी है।' यानी मेरे लिए किन-किन विशेषणों का उपयोग होता था, वह सब बाद में पता लगता था।

हमारा तो ओब्लाइजिंग नेचर (परोपकारी स्वभाव) और बाकी सभी गुण अच्छे थे इसीलिए दुर्गुण नहीं रहे और फिर अहंकार की वजह से भी दुर्गुण नहीं रहते।

हमेशा ही अहंकार की वजह से दूसरे दुर्गुण चले जाते हैं क्योंकि पीठ पीछे बाहर तो लोग ढूँढते रहते हैं कि ये किस जगह पर टेढ़े चल रहे हैं। क्या चोरियाँ करते हैं, बदमाशी करते हैं? यदि मिलावट कर रहा हो न, तो भूल निकालते हैं। अतः अहंकार की वजह से खुद ऐसी भूलें नहीं करते।

मन में माना हुआ मान

अतः मन में तो ऐसा गुमान कि जैसे इस दुनिया में सिर्फ मैं ही हूँ, दूसरा कोई है ही नहीं। देखिए, खुद को न जाने क्या समझ बैठे थे! जायदाद में ज़्यादा कुछ भी नहीं। दस बीघा ज़मीन और एक मकान, उसके अलावा और कुछ नहीं था लेकिन मन में रौब मानो कि चरोतर के राजा! क्योंकि आसपास के छः गाँवों के लोगों ने हमें चढ़ा रखा था। दहेजू दूल्हा, जितना माँगे उतना दहेज मिलने पर ही दूल्हा वहाँ शादी करने जाता था। दिमाग़ में उस बात की खुमारी रहती थी। कुछ पूर्व जन्म का लाया था इसलिए ऐसी खुमारी थी! मेरे बड़े भाई भी ज़बरदस्त खुमारी वाले थे।

मेरे ब्रदर मणि भाई तो सिंह के समान, यों वे बाहर निकलते न, तो सौ लोग तो डर की वजह से इधर-उधर हो जाते थे। उनकी आँखों को देखकर ही इधर-उधर हो जाते थे। उन दिनों उनका पावर कितना? मैं भी डरता था। क्या पावर था! ज़बरदस्त पावर वाले इंसान! देखने में तो भव्य! सभी तरह से यों भव्य! बोलो अब, फिर पावर तो होता ही है न, दिमाग़ में? पावर चढ़ ही गया होगा न? मेरे बड़े भाई बहुत अहंकारी थे। लोग उन्हें अहंकारी कहते थे और 'मुझे बहुत समझदार' कहते थे लेकिन मेरे बड़े भाई मुझ से क्या कहते थे? 'तेरे जैसा अहंकारी तो मैंने गुज़रात भर में नहीं देखा।' अतः मैंने उनसे पूछा कि 'आप मुझे अहंकारी क्यों कहते हैं? आपको मुझ में कहाँ अहंकार दिखाई देता है?' तब कहने लगे, 'तेरा अहंकार, तो छुपा हुआ अहंकार है। मुझे सब समझ में आ गया है।' मेरे भीतर अहंकार की गहरी गाँठ थी! वे मुझ से कहते थे लेकिन मुझे स्वीकार ही नहीं होता था। मैंने सोचा, 'अहंकारी तो वे हैं!' फिर जब मैंने पता लगाया, तब मुझे ऐसा लगा कि यह तो बहुत बड़ा अहंकार है फिर उस गहरी गाँठ के बारे में मुझे पता चला, उनके चले जाने के बाद जब मेरी वह गाँठ फूटी न, तब पता चला कि, 'ओहोहो! सच कहते थे मणि भाई!' और फिर वह अहंकार बहुत चुभने लगा। काटे तो सहन नहीं होता था। कैसे सहन होगा?

मैं अपने बड़े भाई को 'मानी' कहता था लेकिन वे मुझे 'मानी' कहते थे। फिर एक दिन मुझ से कहने लगे, ''तेरे जैसा 'मानी' मैंने कहीं नहीं देखा।'' मैंने पूछा, 'आपको मेरा मान कहाँ नज़र आया?' तब कहने लगे, 'हर एक बात में तेरा मान रहता है।'

और उसके बाद खोजने पर प्रत्येक बात में

मुझे मेरा मान दिखाई दिया और वही मुझे काटता था। मान कैसे पैदा हो गया था? सब लोग मुझे, 'अंबालाल भाई! अंबालाल भाई!' कहा करते थे, 'अंबालाल' तो कोई कहते ही नहीं थे न! छः अक्षर से पुकारते थे, उसकी आदत सी हो गई थी। उससे 'हेबिच्युऐटेड' हो गए थे। अब, मान इतना भारी था तो उसकी रक्षा तो करते न! इसलिए फिर यदि कोई भूल से जल्दी में 'अंबालाल भाई' नहीं बोल पाए और 'अंबालाल' कहकर पुकारे तो उसमें थोड़े ही उसका गुनाह है? छः अक्षर एक साथ जल्दी में कैसे बोल सकता है कोई?

प्रश्नकर्ता : लेकिन आप तो वैसी ही आशा रखते थे न?

दादाश्री : अरे, मेरा तो फिर मोल-तौल शुरू हो जाता कि ''इसने मुझे 'अंबालाल' कहा? अपने आपको क्या समझता है? क्या, उससे 'अंबालाल भाई' नहीं बोला जाता?'' गाँव में दस-बारह बीघा ज़मीन थी और रौब जमाने जैसा कुछ भी नहीं था फिर भी मन में तो न जाने अपने आपको क्या समझ बैठे थे? 'हम छः गाँव वाले, पटेल, दहेज वाले!'

अब, यदि सामने वाले ने 'अंबालाल भाई' नहीं कहा, तो पूरी रात मेरी नींद हराम हो जाती, व्याकुलता रहती। लो! उसमें क्या मिल जाता? कुछ उससे क्या मुँह मीठा हो जाता? मनुष्य में कैसा स्वार्थ होता है! ऐसा स्वार्थ, जिसमें कुछ भी स्वाद नहीं होता। फिर भी मान बैठे थे, वह भी लोकसंज्ञा की वजह से! उस पर से फिर लोगों ने बड़ा बनाया और लोगों ने बड़प्पन की मान्यता भी दी! अरे! ऐसा, लोगों का माना हुआ किस काम का?

ये सभी गायें-भैंसें अपने सामने देखती रहें और फिर कान हिलाएँ तो क्या हम ऐसा समझ लेना है कि वे ऐसे हमारा सम्मान कर रही हैं?! यह सब उसी के समान है। हम अपने मन में मान लेते हैं कि ये सब लोग सम्मान से देख रहे हैं, वे सब तो अपने-अपने दु:ख में डूबे हुए हैं बेचारे, अपनी-अपनी चिंता में हैं। वे क्या आपके लिए बैठे हैं, फुरसत में हैं? सभी अपनी-अपनी चिंता लिए घूम रहे हैं!

मान के लिए गुनाह अपने सिर लिए

रोजाना चार-चार गाड़ियाँ हमारे घर के सामने खड़ी रहती थीं। 'मामा की पोल', संस्कारी मुहल्ला! आज से पैंतालीस साल पहले लोग कहाँ बंगलों में रहते थे? बड़ौदा में 'मामा की पोल' सब से बढ़कर माना जाता था। उन दिनों हम 'मामा की पोल' में रहते थे और किराया पंद्रह रुपए था। उन दिनों लोग सात रुपए वाले किराए के मकानों में पड़े रहते थे यों तो हम बड़े कॉन्ट्रैक्टर कहलाते थे। अब वहाँ 'मामा की पोल' में वे बंगलों में रहने वाले मोटरें लेकर हमारे पास आया करते थे क्योंकि वे मुसीबतों में फँसे हुए होते थे, इसलिए हमारे यहाँ सलाह लेने आते थे। वे उल्टा-सीधा करके आते थे, तब भी उनको 'पिछले दरवाज़े से' बाहर निकाल देता था। पिछला दरवाज़ा दिखाता था कि 'इस दरवाज़े से निकल जाओ।' अब, गुनाह उसने किया और 'पिछले दरवाज़े' से मैं बाहर निकाल देता था। अर्थात् गुनाह अपने सिर ले लेता था। किसलिए? मान की खातिर! 'पिछले दरवाज़े से' निकाल देना, वह गुनाह नहीं है क्या? ऐसे अक्ल लड़ाकर रास्ता दिखाया करता था, जिससे वे बच निकलते थे इसलिए वे हमें सम्मान देते थे लेकिन गुनाह हमारे सिर आता था। फिर समझ में आया कि बेध्यानी में ऐसे गुनाह होते हैं, मान की खातिर।

फिर मान पकड़ में आया। उसके बाद तो मान की बड़ी चिंता रहती थी!

प्रश्नकर्ता : मान आपकी पकड़ में आया, फिर मान को मारा कैसे?

दादाश्री : मान मरता नहीं है। मान को इस तरह से उपशम किया। बाकी, मान मरता नहीं है क्योंकि खुद ही मारने वाला है तो मारेगा किसे? खुद अपने आपको कैसे मार सकता है? इसलिए उपशम किया और जैसे-तैसे करके दिन बिताए।

पसंदीदा अहंकार बना दुःखदाई

उस समय आसपास के लोग क्या कहते थे? बहुत सुखी इंसान है! उस समय कॉन्ट्रैक्ट का व्यवसाय था, पैसे आते-जाते थे। लोगों से बहुत प्रेम था। लोगों ने भी प्रेमदृष्टि कबूल की कि, 'ये भगवान जैसे इंसान हैं, बहुत सुखी इंसान!' लोग कहते थे कि सुखी इंसान हैं और मैं तो अपार चिंता किया करता था फिर एक दिन नींद ही नहीं आ रही थी, चिंता जाती ही नहीं थी फिर उठकर बैठ गया और उस चिंता की एक पुड़िया बनाई, उसे ऐसे लपेटा, वैसे लपेटा और ऊपर से मंत्रों द्वारा विधि की और फिर उसे दो तकियों के बीच रखकर सो गया, तब जाकर ठीक से नींद आ गई और फिर सबेरे उठकर उस पुड़िया को विश्वामित्री नदी में बहा आया। फिर चिंता कम हो गई लेकिन जब 'ज्ञान' हुआ तब सारे संसार को देखा और जाना।

प्रश्नकर्ता : लेकिन 'ज्ञान' से पहले भी यह जागृति तो थी न, कि यह अहंकार है?

दादाश्री : हाँ, वह जागृति तो थी। यह भी मालूम था कि यह अहंकार है लेकिन वह पसंद था। फिर जब उसने बहुत काटा तब पता चला कि यह हमारा मित्र नहीं है, यह तो हमारा दुश्मन है, इसमें कुछ मज़ा नहीं है।

प्रश्नकर्ता : अहंकार कब से दुश्मन लगने लगा?

दादाश्री : रात को सोने नहीं देता था, तो समझ में आ गया कि यह किस प्रकार का अहंकार है! इसीलिए तो एक रात को यों पुड़िया बनाकर सुबह जाकर उसे विश्वामित्री में बहाकर आया! और क्या हो सकता था?

प्रश्नकर्ता : पुड़िया में क्या रखा था?

दादाश्री : यह सारा अहंकार! छोड़ो न, जाने दो इसे यहाँ से! किसलिए यह सब? बेवजह, न कुछ लेना, न देना! लोग तो कहते थे कि 'बेहद सुखी है' और मुझे तो यहाँ सुख का छींटा भी नज़र नहीं आता था, भीतर अहंकार को बेहद चिंता व परेशानियाँ होती रहती थीं न!

अज्ञान दशा में 'हमारा' अहंकार

मुझ में बहुत भारी अहंकार था। लोभ तो मुझ में नाम मात्र को भी नहीं था। इसलिए मैं दूसरों की हेल्प करता रहता था और हेल्प करने की वजह से लोग मुझे मान देते थे। और उस मान से मैं वापस पुष्ट होता जाता था।

प्रश्नकर्ता : आपमें जन्म से ही ममता नहीं थी तो पूर्व जन्म में आपने ऐसा क्या किया होगा जिससे कि यह दशा आई?

दादाश्री : अहंकार के 'बेसमेन्ट' (नींव) पर खड़े रहे। ममता की कुछ पड़ी नहीं थी। अहंकार के रौब में ही घूमते रहेंगे। मान-तान में ही पड़े रहे।

हमारा तो यह अच्छा गुण था कि अहंकारी

थे! कोई मान दे तो खुश! और कुछ भी नहीं चाहिए, कोई चीज़ नहीं चाहिए। यदि भूखे बैठा दो, तो बैठे रहेंगे लेकिन आप ऐसा कहो कि 'आओ, बैठो, कैसे हो, क्या हो?' इस तरह से मान दो, तो बैठे रहते, वही रोग था!

वह अहंकार छोड़ा कब?

प्रश्नकर्ता : अहंकार को छोड़ने का मन कब से हुआ? उस पगले अहंकार, को आपने कब से छोड़ दिया?

दादाश्री : वह छोड़ने से नहीं छूटता। अहंकार कहीं छूटता होगा? वह तो जब सूरत के स्टेशन पर ज्ञान प्रकट हुआ, तो अपने आप ही छूट गया। बाकी, छोड़ने से नहीं छूटता। छोड़ने वाला कौन? अहंकार के राज में छोड़ने वाला कौन? जब अहंकार ही राज़ा हो तो, उसे छोड़े कौन? पहले तो मैं बहुत रौब मारता था।

प्रश्नकर्ता : दादा, आप हीरा बा पर भी रौब मारते थे?

दादाश्री : अरे! बहुत रौब, यों बहुत कठोर। उन बेचारी को बहुत सहन करना पड़ता था, सिर्फ वे ही सहन कर सकती थीं! फिर बाद में मुझे समझ में आ गया, कि यह सब तो भूल हो रही है। इसलिए फिर बंद कर दिया। छोटे थे तब समझ में ही नहीं आता न कि ये भूलें हैं, निरी भूलें ही हैं न सारी!

झूठी खुमारी में पागलपन किया

प्रश्नकर्ता : आपने रौब मारा था और क्या किया था?

दादाश्री : बचपन में नासमझी में कुछ समय तक लड़े भी थे। समझ आने के बाद नहीं।

प्रश्नकर्ता : क्यों लड़ते थे? किस बारे में?

दादाश्री : उनके साथ छोटी-छोटी बातों पर झगड़े होते थे, यों ही झंझट हो जाती थी। कढ़ी ज़रा खारी बन जाती थी, तब।

झूठी खुमारी में पागलपन करते रहे, मानो जैसे दो गाँव के ठाकुर हों, ऐसी खुमारी! मूलतः स्वभाव से पाटीदार न, देखा था सारा तूफान! खाने में यदि ज़रा कुछ बिगड़ जाए न, तो संडासी भी फेंकी है! पहले दिमाग़ टेढ़ा था न, शुरू से ऐसा!

क्योंकि ऐसा है न, हम छः गाँव के पाटीदार, अर्थात् चेक वाले इंसान! अपने आपको बहुत बड़ा समझते थे। और वे ऐसा समझती थीं कि हमने चेक (दहेज) दिया तभी तो मिले हैं! इसलिए वे पहले ही डिम हो जाती (दब जाती) थीं। अतः उनसे तो ऐसा हो नहीं सकता था। जबकि ये भाई तो बहुत रौब जमाते थे।

हमारा थोड़ा पागलपन कहा जाएगा। अहंकार बहुत भारी इसलिए पागलपन। कुछ भी नहीं होता था और शोर मचाता था, अहंकार से बोलता था। दूसरों की बात काट देता था तो फिर उसे पागलपन ही कहेंगे न? हमारे यहाँ पाटीदारों में स्त्रियाँ कहती हैं न, कि 'यहाँ पर स्त्रियाँ तो समझदार आती हैं, आप सभी पागल।' बाकी सब तो कबूल नहीं करते न! हम तो कबूल करते हैं। मैंने देखा है पागलपन, पागलपन देखा है खुद में।

समझ में आ गई भूल, संडासी फेंकते ही

हम भी एक उम्र तक संडासी लेकर यों फेंकते थे। इज़्ज़तदार इंसान थे न! खानदानी! छः गाँव के पटेल! फिर पता चला कि, 'अरे, यह मेरी खानदानियत चली गई! इज़्ज़त नीलाम हो गई! संडासी मारी तभी से इज़्ज़त की नीलामी नहीं कही जाएगी? लोग स्त्री को संडासी मारते

हैं क्या? नासमझी का बोरा! कुछ और नहीं मिला तो संडासी मार दी! यह क्या हमें शोभा देता है?

पहले हमारे बहुत मतभेद होते थे। क्योंकि नासमझी थी न! उसमें भी फिर पाटीदारी खून और नासमझी दोनों इकट्ठे हो गए, फिर क्या होता? संडासी फेंक कर मारते थे। समझ ही नहीं न भाई! फिर अनुभव हुआ कि यह तो भूल कर रहे हैं। किस प्रकार की भूल कर रहे हैं? यह भूल हमें शोभा नहीं देती। शास्त्र पढ़े, सबकुछ पढ़ा, फिर पता चला कि यह तो भूल हो रही है! ऐसी भूल कैसे चलेगी? घर के लोगों को दु:ख कैसे दे सकते हैं? यह सब तो लोगों की सुनकर किया। लोग ऐसा कहते हैं न, कि 'सोंटे से ही नारी सीधी रहती है!' अब, वह तो घोर अज्ञानता है। बाद में उनके साथ सबकुछ ठीक हो गया। फिर चालीस साल से मतभेद नहीं हुआ है क्योंकि मैंने हिसाब लगाकर देखा कि वे घर चलाती हैं इसलिए उन्हें इतने रुपए दे देने हैं ताकि घर चले। फिर हमें उनसे हिसाब-किताब नहीं पूछना है और वे हम से हिसाब न पूछें। अपने-अपने विभाग (डिविज़न) में अलग-अलग रखना ही अच्छा है ताकि हो सके तब तक मतभेद न पड़े।

लोगों ने कैसा समझाया था कि पति को तो अपनी पत्नी को कंट्रोल में ही (दबाकर) रखना चाहिए। इसलिए मैं अपने आपको मालिक मान बैठा था। मालिक! खेत का भी मालिक, ज़मीन का भी मालिक और स्त्री का भी मालिक! तो मैं अपने आपको मालिक मान बैठा था इसलिए फँस गया था। बाद में पता चला कि हम तो मालिक नहीं हैं, हम तो पार्टनर हैं। वी आर पार्टनर। अत: फिर मैंने उनसे कहा कि 'घर का व रसोई का काम आप संभाल लेना और बाहर का काम मैं संभाल लूँगा। आपके काम में मुझे दखल नहीं करना है और मेरे काम में आपको दखल नहीं करना है।'

कमज़ोरी समझ में आने के बाद पलट गए

मैंने जब से यह वाक्य सुना कि 'कमज़ोर पति, पत्नी पर शूरवान।' मैंने सोचा, 'मैं क्या भला कमज़ोर हूँ! इनके सामने मैंने शूरवीरता दिखाई!' अपने आपको टटोलकर देखना चाहिए या नहीं? क्या खुद कमज़ोर नहीं? पहले कमज़ोरी हो गई थी। अकारण ही बात-बात पर मतभेद हो जाता था लेकिन पिछले पचास सालों से तो हुआ ही नहीं है। बाद में फिर हमने किसी को भी कुचला ही नहीं और बहुत समय से इस सिद्धांत को मानते आए हैं इसलिए कुचलने में माना ही नहीं! सब से बड़ा ध्येय यही होना चाहिए कि जो अपनी सत्ता में आया, जो अपने हाथ के नीचे आया उसका तो रक्षण करना चाहिए। कैसा? बल्कि यदि उससे कोई गुनाह हो जाए तब भी उसका रक्षण करना चाहिए। अपने *ऊपरी*(बॉस) के साथ कुछ हो तो कोई हर्ज नहीं लेकिन जो हमारी सत्ता में आया, उसका रक्षण करना चाहिए।

मतभेद खत्म करने के लिए, निकाल दिया खुद के मत को ही

आपको ये सारी बातें अच्छी लग रही हैं या बोरियत हो रही है?

प्रश्नकर्ता : हाँ जी, अच्छी लग रही हैं।

दादाश्री : कौन सी बात अच्छी लगी?

प्रश्नकर्ता : आपने वह जो बात बताई न, संडासी मारकर पतिपना किया था, वह बात मुझे बहुत पसंद आई।

दादाश्री : यह अक्ल का बोरा! और कुछ नहीं मिला तो संडासी मार दी! यह भी कोई तरीका है, यह क्या हमें शोभा देता है?

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, वह जो संडासी मारी थी वह तो सिर्फ, एक बार मारकर समाप्त हो गया। लेकिन वे जो आंतरिक मतभेद होते हैं न, जिनका परिणाम बिहेवियर में(वर्तन में) आता है, वे तो बहुत भयंकर कहलाते हैं न?

दादाश्री : बहुत भयंकर। बाद में मैंने पता लगाया कि क्या इन आंतरिक मतभेदों का कोई उपाय है? तो किसी भी शास्त्र में नहीं मिला इसलिए फिर मैंने अपने आप ही यह खोज करके इसका हल *निकाल* (निपटारा) लिया कि मैं अपने मत को ही निकाल दूँ तो मतभेद नहीं होंगे। मेरा कोई मत ही नहीं, आपका मत ही मेरा मत।

हमें पहले अपना मत नहीं रखना चाहिए। पहले सामने वाले से पूछना चाहिए कि इस बारे में आपकी क्या राय है? यदि सामने वाला अपनी बात पकड़कर रखे, तो हमें अपना छोड़ देना चाहिए। हमें तो सिर्फ, इतना ही देखना चाहिए कि किस तरह से सामने वाले को दुःख न पहुँचे। अपना अभिप्राय सामने वाले पर नहीं थोपना है, हमें सामने वाले का अभिप्राय लेना है। हम तो सभी का अभिप्राय लेकर ही 'ज्ञानी' बने हैं। यदि मैं अपना अभिप्राय किसी पर थोपने जाऊँ तो मैं ही कमज़ोर पड़ जाऊँगा। अपने अभिप्राय से किसी को दुःख नहीं होना चाहिए।

मैं पच्चीस साल का था न, तभी से खोज रहा था। तब तक मेरी लाइफ बहुत खराब बीती, तीस-बत्तीस साल की उम्र तक तो वाइफ के साथ झगड़े, तूफान! लेकिन फिर बहुत सोच-सोचकर पता लगाया। अंत में पैंतीस साल की उम्र में उस मतभेद वाली लाइफ खत्म कर दी। उसके बाद कभी भी हमारे बीच मतभेद नहीं हुआ।

फिर भी जब तक मैं तीस-बत्तीस साल का हुआ तब तक तो चिढ़ता था। फिर बहुत सोचा। मैंने सोचा 'इन सब के पीछे क्या कॉज़ेज़(कारण) हैं और यह ऐसा क्यों है?' समझना तो पड़ेगा या नहीं?

प्रश्नकर्ता : समझना पड़ेगा।

दादाश्री : यह अपनी ही भूल और मूर्खता(फूलिशनेश) है, यह लड़ाई-झगड़ा और यह सब तो। अब, इतने पढ़े लिखे और खानदानी घर के बेटे!

प्रश्नकर्ता : तो फिर यह किस समझ से बंद हो गया, दादा? उस उम्र में ज्ञान तो नहीं था।

दादाश्री : नहीं, यों ज्ञान तो नहीं था लेकिन बुद्धि कला बहुत अच्छी थी। बुद्धि से पृथक्करण कर लेते थे। इस तरह से पृथक्करण कर लेते थे कि इसका क्या होना चाहिए और क्या नहीं, जिससे कि ऐसा न हो। यदि लड़ने का शौक हो तो आराम से पुलिस वाले को गाली देकर आना लेकिन घर में ऐसा शौक पूरा मत करना और यदि घर में गुस्सा आ जाए तो बाहर जाकर पुलिस वाले पर निकाल आना। पुलिस वाला तो आपको ठीक ही कर देगा न!

छोटे थे तब हीरा बा से लड़ते थे न, उसका मुझे पच्चीस-अट्ठाईस साल की उम्र में पता चला तब तो मैं काँप उठा।

फिर उसके बाद जीवन भर मैं उनके कहे अनुसार ही चला ताकि मतभेद हो ही नहीं। अंत तक ऐसा ही चला। यह नाव किनारे तक तो पहुँची न!

दादा व हीरा बा के स्वभाव में भिन्नता

प्रश्नकर्ता : दादा, आपने हीरा बा की प्रकृति को पहचानकर एडजस्टमेन्ट लिए होंगे न? उस बारे में कुछ बात कीजिए न, ताकि हमें भी कुछ सीखने को मिले।

दादाश्री : एक बार मेरा और हीरा बा का झगड़ा हो गया था। बाईस-तेईस साल की उम्र में। मैंने कहा, 'आपका यह स्वभाव मुझे पसंद नहीं है।' हुआ था ऐसा कि हमारे यहाँ मेहमान आए थे और चूरमे के लड्डू बनाए थे, उन दिनों ऐसे व्यंजन बनाते थे जिसमें घी का ज़्यादा उपयोग हो। श्रीखंड वगैरह बनाने की झंझट नहीं करते थे। चूरमा बनाते थे। चूरमा है, मिष्ठान है, सेवईयाँ, जिसमें खूब घी डले, वैसा।

प्रश्नकर्ता : वो घी वाली रोटी बनाते हैं।

दादाश्री : हाँ... लेकिन बहुत सारा घी डालते थे। मेरे फ्रेन्ड सर्कल के पाँच-छः लोग थे और हीरा बा परोसने आईं, वे घी का बर्तन यों थोड़ा-थोड़ा झुकाकर डाल रही थीं, अंदर आत्मा दुःखी हो रहा था। अब, मैं क्या कहना चाहता था कि घी का बर्तन एकदम से झुका दो, तब वे कहने लगीं कि उन्हें ज़रूरत होगी तब तक डालती रहूँगी।

वे यों धीरे-धीरे, एक-एक डिग्री बढ़ाते जाते और मेरा तो दिमाग़ खराब होता जाता। अब मेरा स्वभाव कैसा? कि बर्तन को एकदम से उल्टा कर देना चाहिए। यों दोनों के स्वभाव में भिन्नता थी क्योंकि हम तो पाटीदार, हमारा काम तो बड़ा। इसलिए घी परोसते समय घी का बर्तन यों धीरे-धीरे एक-एक डिग्री करके नहीं झुकाते थे।

लगता था कम परोसने से आबरू चली जाती है

प्रश्नकर्ता : तो जब पटेल घी परोसते हैं तब वे किस डिग्री से परोसते हैं?

दादाश्री : हम पटेलों में कैसे झुकाते हैं? यों नाइन्टी डिग्री पर। यदि किसी और के घर जाएँ तो डिग्री वाला। हीरा बा भी डिग्री वाली थीं इसलिए मुझे अच्छा नहीं लगता था कि इस तरह तो आबरू चली जाती है, इसमें इस तरह से घी डालते हैं। क्योंकि बुद्धि ज़रा कमज़ोर थी न, इसलिए मैं तो घी के बर्तन को इस तरह से झुकाता था और वे ज़रा यों तिरछा रखती थीं इसलिए मैं चिढ़ जाता था कि यह कैसा? इससे तो गरीबी जैसा लगता है, बुरा दिखता है।

प्रश्नकर्ता : यह बात तो ज्ञान से पहले की है न?

दादाश्री : कम उम्र में, बाईस-तेईस साल की उम्र में। मुझे ऐसा लगा कि, दोस्तों के सामने मेरी आबरू चली गई। मुझे आबरू की पड़ी थी, वह चली गई इसलिए मुझे तो ठीक नहीं लगा। उन दिनों मेरा तो दिमाग़ गरम हो जाता था, ज्ञान होने से पहले। मैं अंदर ही अंदर डिस्टर्ब हो जाता था जबकि खाना खाने वालों को कुछ नहीं होता था। उन्हें तो आदत पड़ गई थी कि, 'भाई, हमें तो ज़रूरत के मुताबिक देंगे', और ये भी ज़रूरत के मुताबिक ही देती थीं बेचारी लेकिन हम ठहरे नोबल! ऐसे बड़े मन वाले! इसलिए उस घी के बर्तन झुका दें, ऐसा चाहिए था। उनसे वैसा नहीं हो रहा था अतः मुझे गुस्सा आ गया, बहुत गुस्सा आ गया। वे जब इस तरह से घी डाल रही थीं तब मैंने घी का बर्तन ऊँचा कर दिया। 'ऐसे धार गिरा रही हों?'

प्रश्नकर्ता : फिर?

दादाश्री : उन्हें बुरा लगा। फिर सभी के चले जाने के बाद उन्हें बहुत डाँटा । मैंने कहा, 'ऐसा नहीं चलेगा, घी का बर्तन एकदम उल्टा कर देना चाहिए।' तब वे कहने लगीं, 'मैं आपके दोस्तों को क्या कम परोसने वाली थी? 'मैं तो दे रही थी न, धीरे-धीरे दे रही थी, आप बाहर गिरा दो उसका क्या अर्थ है?' फिर मुझ से कहने लगीं, 'आपने सब के सामने मेरा अपमान कर दिया।'

स्वभाव है उसके पीछे

प्रश्नकर्ता : लेकिन, दादा घी तो बरबाद नहीं कर सकते न?

दादाश्री : वह सब बात सही है लेकिन ये हमारे पटेल में क्या करते हैं? हमारे यहाँ शादियाँ होती हैं न, पटेलों में..... तो वे क्या करते हैं? घी परोसने किसे भेजते हैं? जिसे घी परोसना न आता हो और जो घी बरबाद करे, ऐसे व्यक्ति को भेजते हैं। अत: थोड़ा-बहुत गिर जाए तो भी हर्ज नहीं लेकिन लोगों के मन में तो ऐसा होना चाहिए कि निरा घी-घी-घी ही कर दिया है इसलिए विरोधी व्यक्ति को भेजते हैं। यदि आप उसे बरबादी समझोगे तो वह बरबादी नहीं है, उसके पीछे स्वभाव है।

वे क्या कहती थीं कि बरबाद नहीं होना चाहिए, ऐसी उनकी इच्छा और मेरा कैसा था कि पूरी थाली घी वाली हो जानी चाहिए। अत: इसमें मेरी गलती थी। उनका इरादा गलत नहीं था। वे कहती थीं, 'मैं उनको पेट भर खिलाऊँगी लेकिन आप तो बहुत जल्दबाज़ हो, धांधली मचा देते हो।' मुझे तो ऐसा था कि यह बर्तन पूरा झुकाना होता था इसलिए मेरा दिमाग़ गरम हो जाता था लेकिन वे फिर कैसे करती थीं? धीरे से यों धार गिरती थीं। ऐसा पुसाता नहीं न! यों दिमाग गरम हो जाता था। जब ज्ञान नहीं था तब तो ऐसा बहुत हो जाता था हीरा बा भी समझती थीं कि 'ये तो बहुत कठोर इंसान हैं! इनके साथ कहाँ शादी की?' उन्हें ऐसा लगता था।

हम कबूल करते हैं, अपनी भूलें

वह तो फिर बड़े होने पर समझ में आया कि उनमें समझदारी थीं और मेरा पागलपन था। उन्हें जैसे-जैसे जरूरत होती, वैसे-वैसे, धीरे-धीरे डालती जाती थीं। यह तो मेरा पागलपन ही था कि यों ही उड़ेल देना चाहिए। इज इट वे (यह कोई तरीका है)? जब मुझे खुद को पागलपन समझ में आया तब मैंने कहा, 'यह आपकी समझ सही है।' समझ में तो आता है न कभी न कभी? नहीं आता समझ में, जिसे न्याय बुद्धि से देखना है?

प्रश्नकर्ता : समझ में तो आता है, लेकिन कबूल करना महत्वपूर्ण चीज़ है।

दादाश्री : नहीं। मुँह से भले ही कबूल नहीं करता लेकिन मन में समझ जाता था न! मैं मुँह से कबूल नहीं करता था। इतनी मेडनेस (पागलपन) नहीं थी। वह तो ऐसा है न कि मुँह से कबूल करें, तो एक तो उस समय ज्ञान नहीं और फिर कबूल कर लेते, तो इगोइज़्म जल उठता। जब तक इगोइज़्म है तब तक ऐसा तो करना ही नहीं चाहिए न, कि जलन हो। उस पर पट्टी कहाँ से लगाते? लेकिन मन में समझ गया कि यह मेरी भूल हो गई है।

खुद की भूलें सुधारकर लिए एडजस्टमेन्ट

बहुत सालों बाद मुझे समझ में आया कि इनकी बात सही है और मेरी गलती थी। सोचने पर बहुत सालों बाद समझ में आया कि वे रेग्युलर परोसते थे और अपना तो, यह तो एक प्रकार का इमोशनलपना था। कुछ लोगों को घी का बर्तन उड़ेलना नहीं आता, यदि ज़्यादा घी गिर जाए तो? इस तरह की ऐसी झूठी भूलों में बहुत... लट्ठाबाज़ी!

लेकिन फिर हिसाब लगाया कि उनका यह सही है और मेरा यह उड़ाऊपन है। यदि ज़्यादा डाल देता तो उन्हें खराब लगता। फिर समझ गया, स्वभाव है भाई ऐसा। उनका स्वभाव कैसा है? उचित स्वभाव है, नॉर्मल स्वभाव। यानी जिसे जितना चाहिए उतना डालना चाहिए। तब वह कुछ गलत नहीं कहा जाएगा। मेरा स्वभाव उस समय एब्नॉर्मल था। अब, नॉर्मल हो गया लेकिन उन दिनों एब्नॉर्मल था। एब्नॉर्मल स्वभाव तो पागलपन है, मेडनेस है। आसक्ति है एक प्रकार की। अत्याधिक नोबल होना भी पागलपन है और बहुत बचत करना भी पागलपन है, नॉर्मेलिटी रहनी चाहिए।

उनका हाथ ज़रा संकुचित स्वभाव वाला था न, इसलिए छोटा था तब मुझे बहुत गुस्सा आ जाता था। भीतर बहुत जलन होती थी कि ऐसे संकुचित स्वभाव वाले यहाँ पर कहाँ से आ गए? और फिर सुना देता इतना-इतना। बाद में समझ में आया कि यह तो भूल है! उनकी प्रकृति ऐसी है, मेरी ऐसी है। मेरी प्रकृति को लोग 'उड़ाऊ' कहेंगे, उनकी प्रकृति को सभी 'कंजूस' कहेंगे। यह सब प्रकृति, नॉर्मल (सामान्य) प्रकृति होनी चाहिए। अतः मेरी भी गलत है और उनकी भी गलत है। नॉर्मल होनी चाहिए न? कैसी चाहिए? यह संसार लड़ाई करने जैसा है ही नहीं। वे अपनी प्रकृति के अनुसार चलते रहे।

फिर यों करते-करते टकरा-टकराकर दो-चार साल में सब ठीक हो गया। हम समझ गए, सार निकाल लिया कि इसमें इनकी बात करेक्ट(सही) है। और करेक्ट में फिर दोबारा नहीं देखना है। एक बार करेक्टनेस तय कर दी कि इस बारे में करेक्ट है, अतः फिर और कुछ नहीं देखना चाहिए। बाकी सब संयोगवश है। जो संयोगवश है वह तो भगवान से भी नहीं बदला जा सकता इसलिए मैंने अपनी गलतियाँ सुधारीं और फिर एडजस्टमेन्ट ले लिया।

हीरा बा में घुस गया शंका का भूत

प्रश्नकर्ता : हीरा बा आपको 'तीखे भंवरे' जैसे हैं, ऐसा कहते थे तो आपने कभी ऐसा तीखापन दिखाया था क्या?

दादाश्री : हाँ। वैसे तो हीरा बा और हमारे बीच मतभेद नहीं होता था, लेकिन एक दिन संयोग से ऐसा हुआ था कि मुझे ऐसा करना पड़ा, आवेश में आना पड़ा! हमारे घर के सामने ब्राह्मण रहते थे। उनके साथ बा के समय से मेल-मिलाप था, तीस-चालीस सालों से। वहाँ हीरा बा की बैठक थी। मैं भी वहाँ बैठता था लेकिन फिर ज्ञान होने के बाद लोग यहाँ दर्शन करने आने लगे न, तब हीरा बा वहाँ बैठे रहती थीं। तो उन्होंने हीरा बा को ज़रा बहका दिया।

प्रश्नकर्ता : बहका दिया?

दादाश्री : वे अपने पति को डाँटती होंगी, तो इन्हें भी थोड़ा सिखा दिया। मैं जानता था कि ये बहका रही हैं। वे अपने पति को कुत्ते की तरह रखती थीं। हमारे यहाँ तो (हीरा बा) अक्षर भी नहीं बोल सकती थीं और उनका कुछ चलता भी नहीं था। वे जो बहन थीं न, वे सिर ढके बगैर बैठती थीं चबूतरे पर और कहती थीं कि 'बा आपके आने के बाद से हम सिर ढंकने लगे।' हमें देखते ही सिर ले लेतीं। 'दादा आए' ऐसा कहते ही। भले ही मैं तीस साल का था लेकिन मेरा इतना प्रताप महसूस होता था। क्या कहा? और फिर चला तूफान।

प्रश्नकर्ता : दादा, तूफान में क्या हुआ?

दादाश्री : एक लड़की पैर छू रही थी। वह

विधि कर रही थी बेचारी, जवान लड़की थी। हीरा बा को उन्होंने सिखाया था कि 'ये लड़कियाँ जो पैर छूती हैं इससे दादा का मन बदल जाएगा।' अत: बेचारी हीरा बा घबरा गईं। ये तो खानदानी स्त्री, कैसी खानदानी स्त्री! कभी भी कुछ इधर-उधर नहीं। जैसा हमने पूर्व जन्म में चित्रण किया था ठीक उसी अनुसार यह सब मिला। वे बचपन में बहुत सुंदर थीं। फिर अब और क्या चाहिए और बेचारी निर्दोष। उन्हें गुनाह करना आता ही नहीं, कपट करना बहुत नहीं आता था। हीरा बा बड़े मन वाली थीं, उनका माइन्ड(मन) कितना बड़ा रहा होगा! पति के लिए ज़रा सा भी दूसरा भाव उत्पन्न नहीं होने दे, ऐसी थीं हीरा बा! लेकिन वे सामने वाले ब्राह्मण के यहाँ बैठती थीं न, उन लोगों ने इनके कान में डाला कि 'ये छोटी-छोटी लड़कियाँ आती हैं और दादा जो इतने संयमी हैं, ये उनका संयम तोड़ देंगी।' अब, हीरा बा के मन में ऐसा लगा कि 'फिर मेरी क्या आबरू रहेगी?' वे आबरू वाली थीं और मैं बिना आबरू वाला! उनके मन में ऐसा घुस गया कि मेरी आबरू चली जाएगी। उस बहन ने डाला न, फिर तो इनके मन में बहुत भर गया। मैं समझ गया था कि यह गलत दवाई हो रही है। फिर भी हम तो मना ही नहीं करते थे न, कि, 'वहाँ बैठने मत जाना', ऐसा कभी नहीं कहते थे। हम किसी की स्वतंत्रता नहीं छीनते थे।

हीरा बा ने किया त्रागा

बेचारी वे लड़कियाँ विधि करने आती थीं न, तो हीरा बा को तो कोई रोग नहीं था, बेचारी बहुत अच्छी इंसान! लेकिन सामने वाले के दरवाज़े पर बैठती थीं न, उन स्त्रियों ने इन्हें चढ़ा दिया कि 'ये सब छोटी-छोटी लड़कियाँ आती हैं, यह सब बाहर अच्छा नहीं दिखाई देता। यह क्या अच्छा दिखाई देता है?' 'दादाजी इतने अच्छे इंसान है और यह सब अच्छा नहीं दिखाई देता! लोग तरह-तरह के आरोप लगाते हैं।' इसलिए ये बेचारी घबरा गईं। ये बहुत अच्छी थीं। उन लोगों ने इनके भीतर उल्टा डाल दिया। जिस दूध की खीर बनानी थी, उसमें इन लोगों ने नमक डाल दिया। मैंने कहा, 'आप यह नमक निकाल दो, वर्ना गड़बड़ हो जाएगी। इससे न तो खीर बन पाएगी और न ही चाय!'

दूध में नमक डालें तो क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : फट जाएगा।

दादाश्री : मैं तो जानता था कि ये लोग नमक डाल रहे हैं, वह कभी न कभी फटेगा! लेकिन मैंने राह देखी। एक दिन पकड़ में आ गए। वह लड़की यहाँ पर विधि कर रही थी न, तब इन्होंने क्या किया? झाड़ू लगाते-लगाते मन में चिढ़कर खड़े हुए कि 'यह क्यों आई? इसे निकाल दूँगी।' उस लड़की को निकालने के लिए उपाय किया। क्या किया इन्होंने? झाड़ू लगाते-लगाते दरवाज़ा इतनी ज़ोर से टकराया। वह लड़की डर गई, बुखार आ जाए उतना डर गई।

वह लड़की समझ गई कि ये हमें विधि नहीं करने देना चाहती थीं। वह बहन डर गई कि आज बा नाराज़ हो गए हैं। वह विधि करते हुए यों काँप उठी। उसकी विधि पूरी हो जाने के बाद उस लड़की से मैंने कहा, 'अब, जाओ बहन।'

समझ गए हीरा बा का त्रागा

फिर उस लड़की के जाने के बाद मैंने हीरा बा से पूछा, 'अब क्या है? आप इतनी ज़ोर से दरवाज़ा बजा रहे थे?' तब कहने लगीं 'नहीं, कुछ नहीं, कुछ नहीं। वह तो मैंने यों ही टकराया था।' मैंने कहा, 'नहीं, ऐसा नहीं है।

दरवाज़ा टकराने में हर्ज नहीं है लेकिन आपने किस भाव से टकराया, वह मैं समझ गया,' कहा। मैं समझ गया कि इसके पीछे चाल है। यह चाल क्या समझ में नहीं आएगी भला? उन दिनों अभी जैसा भोला रहा होऊँगा क्या?

फिर मैंने पूछा, 'आज यह सब क्या है? यह दरवाज़ा बेचारा चीख उठा! यह चीख किसकी है? ऐसा कभी होता नहीं है न!' तो फिर घबरा गईं कि 'ये तो सबकुछ समझ गए हैं।' 'अरे! क्या कोई ऐसे कच्चे हैं कि नहीं समझेंगे आप से शादी की तभी से समझते हैं। यह आपका नहीं है। हीरा बा, यह आप नहीं हो। यह कोई बला लग गई है!' उनसे कहा। हीरा बा कभी ऐसा नहीं करती थीं। हमारे खानदान में ऐसा नहीं होता! जब हमारी बा थीं तब भी कभी ऐसा नहीं सुना था। हमारे घर में ऐसा रिवाज़ ही नहीं है। वह लड़की डर के मारे भागकर चली जाए इसीलिए ही, मुझे डराने के लिए नहीं। वह लड़की समझ गई कि अभी हीरा बा डाँटेंगी। वह लड़की विधि करते-करते डर के मारे काँप उठी।

मुझे बहुत खराब लगा कि 'अरेरे! यह दशा! यहाँ आपको दुतकारने को मिला, उस लड़की को? यदि मुझे दो गाली दे देते तो कोई हर्ज नहीं था। उस बेचारी को अशांति रहती है इसलिए दर्शन करने आई है।' लेकिन क्या हो सकता है?

उन्हें यह पसंद नहीं था वह लड़की दर्शन करने आती थी। मैंने पूछा, 'ऐसा क्यों? किसी को कष्ट हो, ऐसा मत करो। आपको यह शोभा नहीं देता, आप बड़ी हो।' तब कहने लगीं, 'नहीं, लेकिन मुझे यह सब पसंद नहीं है।' तो मैंने कहा, 'हम अलग कर लेते हैं। आपका मुझे सबकुछ अच्छा लगता है, मेरा आपको अच्छा नहीं लगता इसलिए हम अलग कर लेते हैं।'

दादा ने निभाया रोल

अब, उस समय अपने चंद्रकांत भाई और दूसरे सभी थे। उन्हें सीख देने के लिए मैंने कहा, 'आज आप सीख लेना, दादा आज (रोल) अभिनय कर रहे हैं।'

इसलिए फिर हमने ज़ोर से, इतने ज़ोर से कि वे सामने के घर वाले सुनें, आसपास वाले सुनें, उस तरह से कहा, 'इन हीरा बा जैसी देवी में किसने यह दवाई डाली? जो उनमें नहीं था वह कहाँ से आ गया? वह कौन नालायक है जिसने यह मिलावट की?' वह उस रास्ते के पार ठेठ दूसरी तरफ तक सुनाई दिया। हमारी वाणी तो सुनी होगी न आपने कभी? नहीं सुनी?

प्रश्नकर्ता : फिर?

दादाश्री : उसके बाद तो मैं उन बहन का नाम लेकर बोलने लगा कि 'हीरा बा में किसने (पॉइज़न) ज़हर डाला, उसे मुझे ढूँढ निकालना होगा। हीरा बा ऐसी नहीं थीं। आपने कुछ डाला है, वर्ना, चाय ऐसी नहीं हो सकती। यह खानदानी चाय है, यदि किसी के पेट में जाए तो उसे तृप्ति मिले, ऐसी चाय है और यह क्या हो गया? किसने पॉइज़न डाला?' ऐसे ज़ोर-ज़ोर से बोलने लगा न, तो उस बहन ने सुना। यह सुनकर आसपास के सभी लोग इकट्ठे हो गए। 'हीरा बा में पॉइज़न किसने डाला, इस देवी में? पति के साथ क्या ऐसा करना चाहिए?' हीरा बा कहने लगीं 'शोर मत मचाओ, शोर मत मचाओ।' मैंने पूछा, यह क्या किया आपने?'

महादेवजी का क्रोध तो देखो

अत: फिर हीरा बा चुपचाप चाय बनाने बैठ गईं। फिर ज़रा स्टोव खड़खड़ाया। वापस खननन

से आवाज़ आई। ऐसा जैसे कि स्टोव रो दे! मैंने सोचा, ''आज खड़खड़ाहट चल रही है, हमें 'स्क्रू' टाइट करना पड़ेगा वर्ना, यह तो उल्टा ही चलेगा।'' तब फिर मैंने सोचा, 'ये जो खड़खड़ाते हैं, यह बंद नहीं होगा। जब तक आवाज़ नहीं सुनेंगे, तब तक। शहनाई कब तक बजाते हैं? जब तक बंदूक नहीं चले न, तब तक बजाते हैं। लेकिन बंदूक चले तो फिर शहनाई-वहनाई सब तुरंत बंद हो जाती हैं इसलिए फिर मैंने तुरंत ही चंद्रकांत भाई से कहा, 'आओ, आप सभी देखना'। चंद्रकांत कहने लगे, 'ऐसा मत करना, दादा।' मैंने कहा, 'चुप बैठो। आप देखो, सीखो कि ज्ञानी पुरुष क्या करते हैं।'

अत: बाहर से मैंने पूछा कि 'भीतर कौन है जो अभी खड़खड़-खड़खड़ कर रहा है?' वे वापस फिर ज़ोर से खड़खड़ाने लगीं इसलिए फिर अंदर जाकर सारे डिब्बे-विब्बे, सब नीचे गिरा दिया। चाय-शक्कर, इलायची-विलायची, जायफल-वायफल, तेल, दाल व घी, सब मिला दिया और वे डर के मारे काँप उठीं। आसपास वाले सभी डर गए। चंद्रकांत भाई देखते रहे, मुझ से कहने लगे, 'दादा, ऐसा नहीं, दादा, ऐसा नहीं।' मैंने कहा, 'देखो यह। आपके घर यदि ऐसा हो तो उस समय आपको यह ज्ञान काम आएगा!'

फिर अड़ोसी-पड़ोसी कहने लगे, 'भाई, 'आपके पैर छूते हैं, ऐसा मत करो, ऐसा मत करो, इतना क्रोध?' मैंने कहा, 'हाँ, देखो क्रोध, यह शिव का यह स्वरूप तो देखो! महादेव जी का! अरे, ऐसा सब फेंक दिया मानो चार सौ वॉल्ट का पावर न छू गया हो!

आबरू जाने के डर से किया ऐसा

उसके बाद सामने वाली तो घबरा गई। उसे सुनाई दे उस तरह से यों पूछा, 'किसने डाला यह हीरा बा में, इस देवी में? जो पति के साथ, ये महिला देवी कहलाती हैं, पूजन करने योग्य, उनमें यह पॉइज़न किसने डाला?' फिर ये तो ऐसी हैं कि किसी का सुनती भी नहीं हैं। बाहर का कोई पॉइज़न घुसने नहीं देतीं। गिरने नहीं देतीं तो यह कैसे घुस गया इस लड़की के नाम का? कहती हैं, 'दादा को ये लड़कियाँ फँसा देंगी।' इसलिए हीरा बा घबरा गईं कि 'हाय-हाय, बाप रे बाप! तब मेरी क्या आबरू रहेगी और इनकी क्या आबरू रहेगी? इस उम्र में हमारी सारी आबरू चली जाएगी न!' अरे! यह दादा तो पूरी दुनिया का दादा है। किसी को भी दु:ख नहीं देता, तो इन लड़कियों को भी कैसे कष्ट दिया जा सकता है? आप देवी जैसी हो! नहीं? कितनी बड़ी भूल की यह!

प्रश्नकर्ता : दादा, नाटक तो करना पड़ता है न? वैसे सारे नाटक करने ही पड़ते हैं।

दादाश्री : वह तेल, गुड़ व घी सब मिलाकर, सब कांच-वांच के बर्तन तोड़ डाले। चंद्रकांत कहने लगे, 'सीख गया दादा।' मैंने कहा, 'हाँ, समझ जा। पत्नी को माँ कहने का समय नहीं है यह!' भाँजा भी सीख गया।

दादा तो 'ज्ञानी पुरुष'। कोई उनसे कहे, 'आपको डॉलर नहीं मिलेंगे', तब भी दबेंगे नहीं। ज्ञानी पुरुष किसी से दबाव में नहीं आते और किसी को दबाते भी नहीं।

किया नाटक कल्याण के लिए

प्रश्नकर्ता : मैंने बा से पूछा था, 'बा, फिर आपने क्या किया? दादा ने यह सब गिरा दिया, तब?' तब बा कहने लगीं, 'क्या बहन, मैंने तो सब उठा लिया और फिर चाय और शक्कर इकट्ठे ही थे न, तो उससे चाय बना ली।'

दादाश्री : नहीं, उनका भी दिमाग़ चढ़ गया था, ऐसा तो कभी नहीं हुआ। उन लोगों ने सब सिखा रखा था, 'थोड़ा-ज़्यादा करना, ताकि लड़कियाँ चली जाएँ, फिर नहीं आएँगी,' ऐसा बताया। कभी-कभी ही ज्ञानावतार होते हैं और वे लड़कियाँ बेचारी दर्शन करने आती थीं, तो शांति से दर्शन तो करने दो लोगों को!

यहाँ तक सिखाया कि 'दादा फिर से इन लड़कियों से शादी कर लेंगे।' ऐसा भी सिखाया था कि 'ये लड़कियाँ दादा को ले जाएँगी।' 'अरे भाई, ऐसा कहीं होता है? मैं कितने साल का, मैं बूढ़ा आदमी। ये किस प्रकार के इंसान!' ऐसा भी सिखाया था लेकिन जब अपने कर्म ही टेढ़े हों तभी सिखलाएँगे न, कर्म टेढ़े थे न? उनका क्या दोष बेचारों का? उनका दोष नहीं था, मेरे ही कर्मों का दोष था। वे बहन तो मेरे हित में ही थीं। लेकिन हीरा बा से क्या कहा? 'ये जो सभी सत्संगी आते हैं न, उनमें से कोई अपना नहीं बनेगा।' और ये छोटी-छोटी लड़कियाँ आती हैं न, वह शोभा नहीं देता।' अतः हीरा बा के मन में ऐसा लगा कि इससे तो मेरी आबरू चली जाएगी! यों उनमें सारे भय डाल दिए थे। अब यह जो हकीकत है, उसे मैं नकार नहीं सकता था। अतः मेरी स्थिति बफर जैसी हो गई। मैं समझ गया कि अब तो इसका हिसाब कर देना अवश्य ही पड़ेगा, हिसाब करना ही पड़ेगा।

इसलिए फिर ऐसा इलाज किया ताकि दोबारा कभी अगर हीरा बा ऐसा कुछ करने जाएँ, तब वे लोग कहें, 'नहीं, ऐसा मत करना। हमें उनके बीच पड़ना ही नहीं हैं। उनका स्वभाव बहुत कठोर है। 'इतना कठोर स्वभाव! ये तो महादेव जी ही देख लो न!' कहने लगीं। इतना प्रभाव डाल दिया। हीरा बा भी समझ गईं कि ये 'तीखे भंवरे' जैसे हैं!

प्रश्नकर्ता : दादा, आप हीरा बा के प्रतिक्रमण करते हैं क्या?

दादाश्री : करते हैं न, क्यों नहीं करेंगे? हमारी गरज से। हमें मोक्ष जाना है तो करना ही पड़ेगा न! यदि मोक्ष नहीं जाना होता तो कुछ नहीं। हीरा बा का तो क्या लेकिन अगर बेटा होता तो बेटे का भी करते क्योंकि मुझे मोक्ष में जाना है। मुझे गरज है न!

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, 'जिस घर में स्त्री की पूजा होती है उस घर में देवता निवास करते हैं?'

दादाश्री : हाँ। हम भी हीरा बा की पूजा करते हैं। शुरू में पैंतीस साल तक लड़ाई-झगड़े किए।

मन के गुणाकार के किए भागाकार

हमारी एक उँगली में ज़रा सा कुछ हो गया उसमें इतनी ज़्यादा तकलीफ होती है, तो हीरा बा को तो सभी उँगलियों में हुआ था तो उन्हें कितनी तकलीफ होती होगी? यह तो मुझे अब समझ में आया, एक उँगली ऐसी है तब भी मुँह नहीं धो पाते। यों करके धोने जाते हैं तो ठीक से नहीं हो पाता। तब मैंने सोचा, 'हीरा बा की एक आँख और एक पैर बेकार हो गए हैं तो उन्हें कितनी तकलीफ होती होगी?' अतः मुझे यह अनुभव हुआ। तो फिर ऐसी दुनिया में कैसे रह सकते हैं? एक ही उँगली में यदि इतनी ज़्यादा झंझट होती है तो भला इस दुनिया में कैसे रह सकते हैं?

हीरा बा का शरीर जब ऐसा हो गया न, तब एक बार हमारा मन ऐसा कह उठा कि 'अरे! उन्हें इतना दुःख सहना पड़ रहा है। इसके बजाय यह शरीर छूट जाए तो अच्छा।' उसके बाद तो कितनी सारी विधियाँ कीं!

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : नहीं। फिर कहा, 'सौ साल के होना बा। इलाज और सेवा मैं करूँगा।' यदि कोई नहीं मिला तो मैं अपनी समझ के अनुसार आपकी सेवा करूँगा लेकिन आप जीना। जल्दी छूट जाए ऐसा तो किसी के लिए भी नहीं होना चाहिए न?

प्रश्नकर्ता : नहीं होना चाहिए।

भूलों को खत्म करना, वही है वीतराग मार्ग

दादाश्री : जब 'हमारी' टेपरिकॉर्डर, बजती है तब यदि उसमें कोई भूल हो जाए तो हमें तुरंत ही उसका पश्चाताप करना पड़ता है। वर्ना नहीं चलेगा। टेपरिकॉर्ड की तरह निकलती है इसलिए हमारी वाणी मालिकी रहित है। तब भी हमारी ज़िम्मेदारी है। लोग तो कहेंगे न कि 'साहब टेप तो आपकी ही है न?' ऐसा कहेंगे या नहीं? टेप क्या दूसरे की थी? इसलिए उन शब्दों को हमें धोना पड़ता है। उल्टे शब्द नहीं बोल सकते।

इस दुनिया में सभी निर्दोष हैं फिर भी देखो, ऐसी कठोर वाणी निकल जाती है न!

हम तुरंत प्रतिक्रमण करते हैं। हमने साधु-आचार्य, सभी को निर्दोष देखा है। हमारे लिए एक भी दोषित नहीं है और दोषित जो बोला जाता है, उसमें भी हमें कोई दोषित दिखाई ही नहीं देता लेकिन दोषित बोल देते हैं फिर उसके बाद तुरंत हमारे प्रतिक्रमण होते हैं। उतनी हमारी चार डिग्रियाँ कम हैं न! उसी का यह फल है। वर्ना, बाकी तो संपूर्ण वीतरागता बरतती है। वीतरागों का मार्ग यानी कि भूलों को खत्म करना। जहाँ-तहाँ से भूलों को मिटाना और लोकभाषा में से वीतराग भाषा में आना वह।

हम दखलंदाज़ी करते हैं, कठोर शब्द बोलते हैं, ऐसा जान-बूझकर बोलते हैं लेकिन कुदरत में तो हमारी भूल हो ही गई न! तो उसके लिए हम प्रतिक्रमण करवाते हैं। हर एक भूल का प्रतिक्रमण होता है। हमें ऐसा रहता है कि सामने वाले का मन न टूट जाए।

प्रतिक्रमण सब से अंतिम साईन्स है। इसलिए यह आपके साथ कठोरता से बात की हो और आपको बहुत दु:ख नहीं भी हुआ हो फिर भी मुझे समझ जाना चाहिए कि मेरी वाणी कठोर निकली है। मुझे सख्ती से बोलना ही नहीं चाहिए। अत: इस ज्ञान के आधार पर अपनी भूल पता चलती है इसलिए मुझे आपका नाम लेकर प्रतिक्रमण करना पड़ता है।

जो 'है', मुझे उसे 'नहीं है' ऐसा नहीं कहना चाहिए और जो 'नहीं है' उसे 'है', ऐसा नहीं कहना चाहिए। इसलिए मुझ से कुछ लोगों को दु:ख हो जाता है। जो 'नहीं है' उसे यदि मैं 'है' कहूँगा तो आपके मन में भ्रम हो जाएगा और यदि ऐसा बोलूँगा तो उन लोगों को मन में उल्टा लगेगा कि 'ऐसा क्यों कह रहे हैं?' अत: ऐसा कहने पर मुझे रोज़ उस तरफ का प्रतिक्रमण करना पड़ता है! क्योंकि उसे दु:ख तो होना ही नहीं चाहिए। वह मानता है कि 'यहाँ इस पीपल में भूत है', और मैं कहूँ कि, 'इस पीपल में भूत जैसी चीज़ ही नहीं है।' इससे उसे दु:ख तो होता है इसलिए फिर मुझे प्रतिक्रमण करना पड़ता है। वह तो हमेशा करना ही होगा न! मैं किसी को दु:खी करने नहीं आया हूँ। हम इसलिए नहीं आए हैं कि किसी को दु:ख हो। हम तो सुख देने के लिए आए हैं और ज्ञानी व अज्ञानी, दोनों को सुख नहीं दिया जा सकता इसलिए इस तरफ का प्रतिक्रमण करना पड़ता है।

प्रश्नकर्ता : कई बार अज्ञान, ज्ञान का चोला पहनकर प्रकट होता है।

दादाश्री : अज्ञान प्रकट होगा तो टिकेगा नहीं, एक सेकन्ड भी नहीं टिकेगा। और अपने यहाँ तो बिल्कुल भी नहीं टिकेगा। क्योंकि अपना ज्ञान कैसा है? डिमार्केशन वाला ज्ञान है। यह अज्ञान और यह ज्ञान, दोनों के बीच डिमार्केशन वाला है इसलिए यहाँ पर तो चलेगा ही नहीं न कुछ भी!

फिर यदि उसे दु:ख हो जाए तो प्रतिक्रमण करना पड़ेगा। जितना सुधार सकते हैं, उतना सुधार लेते हैं कि 'भाई, हम से भूलचूक हुई हो तो हम प्रतिक्रमण करते हैं'।

लोगों को दु:ख तो देना ही नहीं चाहिए। आपको उसकी नासमझी लगती है लेकिन उसके मन से तो वह समझ ही है न! हमें उसमें उसकी नासमझी लगती है लेकिन वह तो उसे समझ ही मान बैठा है न, हम उसे दु:ख क्यों पहुँचाए?

करुणा के प्रतिक्रमण

मैं तो इस जन्म में साधु-महाराज के लिए ऐसा कहता हूँ। उन सभी के लिए मैं तो कहता हूँ कि वे सारे संसार के तमाम धर्म मार्ग में उल्टा कर रहे हैं!' जैसे कि धर्म का राजा मैं ही हूँ! लेकिन हमें इस तरह लोगों के बारे में उल्टा नहीं कहना चाहिए। ये सारे लोग इसमें से छूट ही जाने चाहिए, अत: ऐसा कहकर भी पाप मोल लिए हैं न। और कभी यदि मुझे इन पापों को भुगतना हो तो वे पाप मुझे भुगतने पड़ते हैं। दूसरे पाप नहीं, दूसरे मेरे कोई स्वतंत्र पाप तो हैं ही नहीं। अब, यदि ऐसा कहना पड़े तो फिर अभी क्या रहा? अभी सिर्फ मैं कहता ही हूँ। और कहते समय भी हम जानते ही हैं कि यह गलत कहा जा रहा है। लेकिन वे सब शब्द बाहर निकले बगैर रहते नहीं न!

प्रश्नकर्ता : वह तो दादा करुणा भाव से बोलते हैं न!

दादाश्री : है करुणा भाव से, लेकिन करुणा भाव से भी ऐसा नहीं होना चाहिए। यों हमारी वाणी स्याद्वाद ही मानी जाती है लेकिन मेरा यह वर्तन ऐसा होता है कि किसी धर्म वाले को किंचित्मात्र भी दु:ख न हो और किसी भी जगह पर पक्षपात नहीं होता।

अब, किसी धर्म के लिए जो कहना पड़ता है न, कि 'यह उचित नहीं है', ऐसा बोला वहाँ पर स्याद्वाद चूक गए। फिर भी उचित राह पर लाने के लिए यों कहना पड़ता है। भगवान तो क्या कहते हैं? कि यह भी उचित है, वह भी उचित है, चोर चोरी करे वह भी उचित है, इसकी जेब कट गई वह भी उचित है। भगवान तो वीतराग! दखलंदाज़ी करते ही नहीं न! मिलावट करते ही नहीं न। और हमारी तो सारी खटपट हैं। हमारे हिस्से में यह खटपट आई है।

नियम क्या है कि किसी भी व्यक्ति से आप ज्ञान की बात कर सकते हो लेकिन वे ऐसे हो, जो ज्ञान नहीं ले सकते, ठंडे हो, तो आपको धीमे से छोड़ देना है, वीतराग होना है लेकिन इसके पीछे ऐसी करुणा है कि 'आप यहाँ तक आए हो तो प्राप्त कर लो न, भाई! इतना बुखार है फिर भी दवाई नहीं पीते! दवाई तैयार है' लेकिन नियमानुसार उसे सही नहीं माना जाएगा इसलिए फिर प्रतिक्रमण करने पड़ते हैं। हम से कुछ लेना-देना हुआ हो, तो उसके प्रतिक्रमण करने पड़ते हैं। इसे भगवान ने 'करुणा के प्रतिक्रमण' कहे हैं।

हम तो झट से इलाज कर लेते हैं और फिर हम तो वीतराग ही रहते हैं। हमें राग-द्वेष नहीं होते। इलाज के लिए तैयार। और गलती से

भी उसकी ओर ज़रा सा अभाव हो जाए, वैसे तो होता ही नहीं है लेकिन यदि कभी हो जाए तो हमारे पास प्रतिक्रमण रूपी दवाई रहती है इसलिए तुरंत ही इलाज कर लेते हैं! प्रतिक्रमण रूपी दवाई रहती है न!

गैरज़िम्मेदारी वाला वर्तन नहीं चलेगा

जब मैं औरंगाबाद जाता हूँ न, तो वहाँ सभी प्रधान, मेम्बर ऑफ पार्लियामेन्ट, एम.एल.ए. वगैरह सब आते हैं। अब, जब वे आते हैं तब मुझे तो सबकुछ करना ही पड़ता है न! वे कहें, 'मैं एम.एल.ए. हूँ, मुझे ऐसा प्रसारण करना है और मुझे ऐसा करना है, तो विधि कर दीजिए'। अब, भीतर ऐसी कोई बरकत नहीं होती, यों नौकरी में रखने लायक भी नहीं होते!

प्रश्नकर्ता : स्पष्ट शब्दों में कहें तो रबिश मटेरियल से भरे हुए!

दादाश्री : लेकिन क्या हो सकता है? यदि ऐसा कहें तो प्रतिक्रमण करने ही पड़ेंगे न, कोई चारा ही नहीं है न! हम कभी भी ऐसा नहीं कहते लेकिन यदि कहें तो हम प्रतिक्रमण करते हैं। फिर क्या हो सकता है? यह माल भी यदि भरा होगा तभी निकलता है न, यों ही कहीं निकल सकता है? उसके लिए फिर प्रतिक्रमण करने पड़ते हैं, छुटकारा ही नहीं न! हमें तो ऐसा चलेगा ही नहीं। गैरज़िम्मेदारी वाला वर्तन तो किसी का भी नहीं चलेगा।

यदि प्रतिक्रमण नहीं करेंगे तो दावा करेगा

प्रश्नकर्ता : उनकी विराधना करने की अपनी भावना नहीं हो फिर भी क्या प्रतिक्रमण करने चाहिए? हम तो जो सच बात है, वही कहते हैं न?

दादाश्री : ऐसा है न, जब हम कहते हैं, उस वक्त हमारे ज़ोरदार प्रतिक्रमण चल रहे होते हैं, कहने के साथ ही।

प्रश्नकर्ता : लेकिन जो बात सच है, वही कह रहे थे, उसमें क्या प्रतिक्रमण करना?

दादाश्री : नहीं, फिर भी प्रतिक्रमण तो करने ही पड़ेंगे न। किसी का गुनाह क्यों देखा? निर्दोष है, फिर भी दोष क्यों देखा? निर्दोष है फिर भी उसकी बदगोई तो हुई न? बदगोई हो, ऐसी सही बात भी नहीं कहनी चाहिए, सही बात भी गुनाह है। संसार में ऐसी सही बात कहना गुनाह है। सही बात हिंसक नहीं होनी चाहिए। यह हिंसक बात है।

मैं जब कहता हूँ तब मुझे जागृति रहती है लेकिन आपको ऐसा नहीं कहना चाहिए। जागृति रहनी चाहिए न! बोलना नहीं चाहिए। यदि कहोगे तो आपको बहुत प्रतिक्रमण करने पड़ेंगे।

प्रश्नकर्ता : यदि प्रतिक्रमण नहीं करें तो फिर क्या होगा? दोष लगेगा?

दादाश्री : वह मुकदमा दायर कर देगा। लोगों ने अपने पर कोर्ट में सौ मुकदमे दायर किए होंगे। उनका यदि *निकाल* नहीं करेंगे तो क्या होगा? मुकदमे तो रहेंगे ही, यानी जब तक प्रतिक्रमण नहीं करेंगे, तब तक मुकदमे रहेंगे ही।

आज का दर्शन और गत भव का रिकॉर्ड

हमें पूरा जगत् निर्दोष दिखाई देता है लेकिन वह श्रद्धा में है। श्रद्धा में यानी दर्शन में है और अनुभव हुआ है कि निर्दोष ही हैं फिर भी वर्तन जो है, वह अभी भी नहीं छूटता!

अभी किसी फलाने संत की उल्टी बात आए तो वे चाहे जैसे भी हों, फिर भी आपको तो वे निर्दोष ही दिखाई देने चाहिए। फिर भी

हम ऐसा कहते हैं कि 'ये ऐसे हैं, ऐसे हैं', ऐसा नहीं कहना चाहिए। हमारी श्रद्धा में वे निर्दोष हैं, ज्ञान में आ गया है कि निर्दोष हैं, वर्तन में निकल जाता है इसीलिए इसे 'टेपरिकॉर्ड' कहते हैं!! जो टेपरिकॉर्ड हो चुका, उसका क्या हो सकता है? पर सारी टेपरिकॉर्डर इफेक्टिव है न, इसीलिए उसे तो ऐसा ही लगता है कि अभी दादा ने ही कहा है।

प्रश्नकर्ता : और कहते समय क्या अंदर ऐसा रहता है कि यह भूल है?

दादाश्री : हाँ, कहते समय, ऑन द मॉमेन्ट (तत्क्षण) पता रहता है। यह गलत हो रहा है, यह गलत निकल रहा है।

प्रश्नकर्ता : वह ठीक है पर यह उस संत की भूल है, ऐसा जो कहा जा रहा है, उस समय ऐसा पता रहता है न, कि उनकी इस संदर्भ में इसे भूल कही जाएगी?

दादाश्री : हाँ, यह जानते हैं कि, किस संदर्भ में उनकी भूल कही जाएगी, पर वह मान्यता तो पहले की थी न! यह सब, उससे पहले का ज्ञान था। अत: यह आज की टेपरिकॉर्ड नहीं है।

प्रश्नकर्ता : अत: इस टेप में जो पहले का ज्ञान है, वह बोलने में हेल्प करता है?

दादाश्री : हाँ। और अभी तो वह बोल ही रहा है लेकिन लोग तो ऐसा ही समझते हैं न कि, 'आज दादा बोले, अभी दादा बोल रहे हैं', पर मैं जानता हूँ कि यह पहले का है। फिर भी हमें खेद तो होता रहता है न! ऐसा नहीं निकलना चाहिए। एक अक्षर भी नहीं निकलना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : अब, यदि जैसा है वैसा नहीं कहेंगे, तो सुनने वाले सब गलत रास्ते पर चले जाएँगे, ऐसा हो सकता है न?

दादाश्री : सुनने वाले? पर वह बुद्धि का दखल ही है न! वीतरागों को कोई दखल नहीं रहता!

प्रश्नकर्ता : पर सुनने वाले तो बुद्धि के अधीन ही हैं न?

दादाश्री : हाँ। पर मेरी बुद्धि में आया कि सुनने वालों को नुकसान होगा तो, नुकसान और फायदा, प्रॉफिट और लॉस देखा न? प्रॉफिट एन्ड लॉस तो बुद्धि दिखाती है कि सामने वाले को नुकसान होगा! फिर भी अभी हम इन संत के बारे में बोले लेकिन आज यह काम का नहीं है। उस समय हम ऐसा नहीं मानते थे कि यह पूरा जगत् निर्दोष है।

प्रश्नकर्ता : उस समय बुद्धि का दखल था, ऐसा हुआ न?

दादाश्री : हाँ, उस समय बुद्धि का दखल था। यह दखल जल्दी नहीं जाएगा न?

प्रश्नकर्ता : यानी पूरा वर्तन पहले के ज्ञान को लेकर ही है न?

दादाश्री : पहले जब तक बुद्धि थी न, तब तक ऐसा था। पर बुद्धि के चले जाने के बाद ऐसा नहीं न! वर्ना, बुद्धि हर एक को ऐसा ही रहती है। हमेशा ही जब तक बुद्धि है, तब तक कम्पेयर और कोन्ट्रास्ट चलता ही रहता है।

प्रश्नकर्ता : और सिद्धांत दिया है न कि यह निर्दोष है।

दादाश्री : अत: है निर्दोष फिर भी ऐसा क्यों होता है? हम यह स्पष्ट कहते हैं कि पूरा जगत् निर्दोष है। और दूसरी तरफ ये ऐसे शब्द निकलते हैं!

वाणी अलग, अभिप्राय अलग

वाणी बोलते हैं, उस पर अभिप्राय अलग है। कैसा है यह संसार! वाणी बोलते हैं, उस पर अभिप्राय कैसा है? कि 'ऐसा नहीं है। यह गलत है। ऐसा नहीं होना चाहिए।' लेकिन देखो न, यह दुनिया कैसी चल रही है! जब ऐसा बोलते हैं तब उसके साथ-साथ उस ओर जागृति रहती है।

प्रश्नकर्ता : और जागृति रहती है।

दादाश्री : हाँ, कि 'ऐसा नहीं होना चाहिए।' क्योंकि हमने पूरे संसार को निर्दोष देखा है, जाना है। अनुभव भी हुआ है कि निर्दोष है लेकिन वर्तन में ऐसा निकल जाता है। वर्तन में क्यों नहीं आने देता? बीच में यह जो वाणी है, वह दखल देती है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन आपको तो सतत जागृति है।

दादाश्री : जागृति है तो सही लेकिन जब तक ऐसी वाणी बंद नहीं होती तब तक तो पूर्ण पद प्राप्त नहीं होगा। वाणी कैसी निकलती है? यों तेज़!

अब, यह वाणी कब भरी थी? जब जगत् को निर्दोष नहीं देखा था उस समय भरी थी कि 'यह दोषित है। ये लोग ऐसा क्यों करते हैं? ऐसा नहीं होना चाहिए। धर्म ऐसा क्यों होना चाहिए?' वह जो भरा हुआ माल है, वह आज निकल रहा है। तब का अभिप्राय आज निकल रहा है और आज का अभिप्राय उससे सहमत नहीं है। अत: जब हम यह कहते हैं न, तब साथ-साथ यह अलग अभिप्राय रहता है। दोनों साथ-साथ चलते हैं।

साथ ही हमारी प्रतीति में भी है कि वे दोषित नहीं है। प्रतीति में निर्दोष है। प्रतीति पूरी ही बदल गई है। अत: यह निर्दोष है ऐसा मानकर मैं यह बोलता हूँ।

प्रश्नकर्ता : निर्दोष है ऐसा समझकर बोलते हैं?

दादाश्री : हाँ।

प्रश्नकर्ता : तो फिर आपको प्रतिक्रमण क्यों करने पड़ते हैं?

दादाश्री : लेकिन ऐसा नहीं बोलना चाहिए। एक शब्द भी नहीं बोलना चाहिए। ऐसा टेढ़ा शब्द क्यों बोलें? जिसके बारे में कह रहे हैं, वह तो यहाँ पर है ही नहीं। उसे तो दु:ख नहीं होता और आप सभी को हर्ज नहीं है क्योंकि दादा की बिलीफ में तो ऐसा निर्दोष ही है तो फिर अब हर्ज नहीं है लेकिन ऐसे भारी शब्द क्यों बोले? इसलिए प्रतिक्रमण करना पड़ता है। भारी शब्द होना ही नहीं चाहिए।

प्रश्नकर्ता : आप तो बोलते समय अलग के अलग ही रहते हैं तो फिर प्रतिक्रमण किसलिए?

दादाश्री : अलग हैं इसलिए प्रतिक्रमण 'मुझे' नहीं करना है। ये अंदर ही अंदर, जो बोलते हैं न, उन्हीं को करना है, 'आप प्रतिक्रमण कर लो' और आपको भी ऐसा ही है। प्रतिक्रमण 'आपको' नहीं करना है। 'चंदूभाई' से कह देना है। जिसने अतिक्रमण किया है न, उसी को प्रतिक्रमण करना है।

प्रश्नकर्ता : आप उस भूल का प्रतिक्रमण कैसे करते हैं?

दादाश्री : बाद में प्रतिक्रमण करना पड़ता है। ज्ञान से संबंधित भूल नहीं है। यदि स्याद्वाद न रहे तो किसी व्यक्ति पर सख्ती हो जाती है। जब स्याद्वाद हो तब सख्ती नहीं होती। बिल्कुल संपूर्ण रूप से स्याद्वाद। यह तो स्याद्वाद कहलाता है लेकिन पूर्ण स्याद्वाद नहीं कहा जाएगा न! अर्थात् जब केवलज्ञान होता है तब पूर्ण स्याद्वाद रहता है।

अभिप्रायों से छूटना है, चीज़ों से नहीं

प्रश्नकर्ता : हमारी समझ में तो सब है लेकिन उस मुताबिक होता नहीं है, उसका क्या?

दादाश्री : अगर वैसा नहीं होता तो उसमें हर्ज नहीं है। समझने की ही ज़रूरत है। समझना अर्थात् अभिप्राय अलग है। तभी से वह उससे छूटने लगेगा। चंदूभाई कोई भी खराब कार्य करें और वे कहें कि मुझे यह काम नहीं करना है तभी से अभिप्राय अलग हो जाता है और यदि हमेशा वैसा वह अभिप्राय रहे तो वह उस से छूटेगा ही। अभिप्राय से ही मुक्त करना है। चीज़ों से मुक्त नहीं करना है। चीज़ों से तो अपने आप ही मुक्त हो जाए, तब ठीक है लेकिन उसे निराधार बना देना है। अत: अभिप्राय से मुक्त होना है इसलिए हमने प्रतिक्रमण रखा है न! प्रतिक्रमण करने पर अभिप्राय से मुक्त हो जाएगा। उसका सही तरीके से प्रतिक्रमण किया तो अभिप्राय से मुक्त हो जाएगा और अब पश्चाताप भी करता है।

अगर प्रतिक्रमण नहीं करोगे तो आपका अभिप्राय रह जाएगा, उससे आप बंधन में आ जाओगे। जो दोष हुआ उसमें आपका अभिप्राय रह जाएगा। यह प्रतिक्रमण करने से वह अभिप्राय टूट जाएगा। अभिप्रायों से मन उत्पन्न हुआ है। मुझे किसी भी व्यक्ति के लिए ज़रा सा भी अभिप्राय नहीं है क्योंकि एक बार देखने के बाद मैं अभिप्राय नहीं बदलता। कोई व्यक्ति संयोगवश चोरी करे और मैं खुद देखूँ तब भी उसे मैं चोर नहीं कहूँगा क्योंकि संयोगवश है। जगत् के लोग क्या कहते हैं? जो पकड़ा जाता है उसे चोर कहते हैं। वह संयोगवश (चोर) था या कैसे? या सदा से चोर था? उसकी जगत् के लोगों को कुछ नहीं पड़ी है। मैं तो हमेशा के चोर को चोर कहता हूँ। और संयोगवश को में चोर नहीं कहता। यानी मैं तो एक बार अभिप्राय बनाने के बाद दूसरी बार अभिप्राय बदलता ही नहीं। अभी तक किसी भी व्यक्ति के लिए मैंने अभिप्राय नहीं बदला।

प्रश्नकर्ता : जो अभिप्राय बन जाते हैं, उन्हें कैसे छोड़ें?

दादाश्री : अभिप्राय छोड़ने के लिए हमें क्या करना पड़ेगा कि 'इस भाई के लिए मेरा ऐसा अभिप्राय बन गया, वह गलत है, हम ऐसा कैसे कर सकते हैं?' ऐसा कहने से वह अभिप्राय छूट जाएगा। हम सब के सामने कहें कि, 'यह अभिप्राय गलत है, इस भाई के लिए क्या ऐसा अभिप्राय बनाना चाहिए? यह आप क्या कर रहे हो?' उस अभिप्राय को गलत कहने से वह छूट जाएगा।

इजाज़त लेकर, फटकारते हैं करुणा से

बाईस तीर्थंकरों के जो शिष्य थे, वे सब शूट ऑन साइट वाले थे। वे इतने अधिक जागृत थे कि दोष होते ही तुरंत उन्हें पता चल जाता था। अब चौबीसवें तीर्थंकर महावीर के और ऋषभदेव भगवान के, दोनों के शिष्य अलग ही तरह के थे। ऋषभदेव के जड़ और सरल और महावीर के जड़ और टेढ़े। 'वंक जड़ाय पच्छिमा।' अब, ऐसा भगवान महावीर ने कहा ही है न! अब, यदि हम साधुओं से पूछें कि 'भगवान ने कहा है?' तब वे कहेंगे, 'हाँ, कहा ही है न!' वे खुद पर नहीं लेंगे। ऐसा कहेंगे कि 'लोग ऐसे हो गए हैं'। लेकिन सभी ऐसा ही कहते हैं न! इसलिए उसके हिस्से में, किसी के भी हिस्से में आया ही नहीं न! तब फिर वापस महावीर के घर चला जाता है, वापस जहाँ था वहीं के वहीं!

'हम' ऐसा बोलते ज़रूर हैं लेकिन हम तो बोलने से पहले ही प्रतिक्रमण कर लेते हैं, आप ऐसा मत बोलना। हम ऐसा कठोर बोलते हैं, भूल निकालते हैं फिर भी हम निर्दोष देखते हैं। लेकिन जगत् को समझाना तो पड़ेगा न? यथार्थ, सही बात तो समझानी पड़ेगी न?

हम जैसी वाणी बोलते हैं वैसी आपको नहीं बोलनी है क्योंकि हमारे तो वाणी के शब्दों के साथ ही प्रतिक्रमण भी चलते हैं।

प्रश्नकर्ता : उससे तो जवाबदेही आ जाएगी।

दादाश्री : बहुत बड़ी जवाबदेही। हम जैसा कहते हैं वैसा आपको नहीं कहना है। आपको सुनना है...

एक बार एक भाई कह रहे थे। मैंने कहा 'अरे, ऐसा मत कहना, ज्ञानी पुरुष के अलावा ऐसा किसी को नहीं बोलना है। ज्ञानी पुरुष की जागृति तो और ही प्रकार की होती है! पहले वे प्रतिक्रमण कर लेते हैं और उसके बाद ही कहते हैं। इजाज़त लेकर कहते हैं। इजाज़त लेकर ऐसा कहते हैं कि 'हे शुद्धात्मा भगवान! आप ज़रा बाहर बैठना' और इसे ठीक करने का हेतु है। हमारा हेतु इसे बिगाड़ने का नहीं है।

प्रश्नकर्ता : अंत में तो करुणा ही है।

दादाश्री : हाँ। करुणा ही है, इसके पीछे ज्ञानी की करुणा के अलावा और कुछ नहीं होता। ज्ञानी बहुत कठोर हो जाते हैं, बहुत वैसे हो जाते हैं। वैसे तो उनमें क्रोध होता ही नहीं है लेकिन कठोरता भी जब सामने वाला ऐसा कुछ बड़ा हिसाब वाला हो न, तब उसे बहुत फटकारना पड़ता है। तब मैल चला जाता है यानी कि जैसे पात्र होते हैं उस तरह से फटकारना पड़ता है।

ज्ञानी के प्रतिक्रमण बाड़ सहित

हम से भी कभी किसी व्यक्ति को दु:ख हो जाता है, हमारी इच्छा नहीं हो फिर भी। अब, सामान्य तौर पर हम से ऐसा होता ही नहीं लेकिन किसी को हो जाता है। अभी तक पंद्रह-बीस सालों में दो-तीन लोगों को हुआ होगा। वे भी निमित्त होंगे तभी न! बाद में हम उसका प्रतिक्रमण करके उस पर फिर से बाड़ लगा देते हैं, ताकि वह गिर न जाए। हमने जितना ऊपर चढ़ाया है, वहाँ से वह गिर न जाए। उसकी सभी तरह से रक्षा करके वापस बाड़ लगा देते हैं। उसे गिरने तो देते ही नहीं हैं। वह सामने बोले, गालियाँ दे जाएँ तब भी गिरने नहीं देते। उस बेचारे को पता ही नहीं है, बेध्यानी में बोल रहा है। उसमें हमें हर्ज नहीं है। अगर गिरने दें तो हमने जितना चढ़ाया था, वह गलत साबित होगा!

हम सैद्धांतिक रहते हैं कि 'भाई, यह पेड़ लगाया, लगाने के बाद रोड बनाते समय यदि वह बीच में आ रहा हो तो रोड मोड़ देते हैं लेकिन पेड़ को कुछ नहीं होने देते। हमारे ऐसे सारे सिद्धांत हैं। ऐसे किसी को गिरने नहीं देते। फिर वह उसी जगह पर रहता है। हम यहाँ घर बैठे-बैठे उसके सारे विचार ही बदल देते हैं। वहाँ पर हम ज़रा ज़्यादा मेहनत करते हैं। हमें ज़्यादा मेहनत करनी पड़ती है। आपके लिए, सब के लिए मेहनत नहीं करनी पड़ती। उसके लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है। उसके सारे विचारों को ही हमें पकड़ लेना पड़ता हैं। ऐसा करना पड़ता है कि इससे आगे वह विचार न कर सके। ऐसा कोई ही केस होता है न! सारे केस ऐसे नहीं होते न!!

प्रश्नकर्ता : यह बाड़-वाड़ लगाना, वह सब क्या है? उसमें क्या करते हैं?

दादाश्री : उसका अंत:करण पकड़ लेते हैं, उसका व्यवस्थित हमारे हाथ में ले लेते हैं।

प्रश्नकर्ता : वह कैसे?

दादाश्री : वह सब हम ले लेते हैं, अगर नहीं लेंगे तो फिर वह गिर जाएगा न!

प्रतिक्रमण, सामने वाले के समाधान के लिए

इस जन्म जयंति के अवसर पर पच्चीस सौ लोग आए थे, उनमें से किसी की दृष्टि मेरे लिए बिगड़ी हुई होगी न?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : उसी तरह, क्या मेरी किसी की तरफ बिगड़ी थी?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : किस कारण से? भीतर साफ किया था न! पूरी रात मैं साफ करता रहा और फिर सुबह छोड़ दिया। तो फिर गंदा होगा ही नहीं न! इस तरफ से, उस तरफ से, ऐसी सभी तरफ से साफ करते रहे।

प्रश्नकर्ता : कैसे किया था दादा? ऐसा क्या किया?

दादाश्री : कितने ही प्रतिक्रमण किए। कितने सारे लोगों के, उनसे मिलना, बातचीत करना। रात में उन सभी लोगों से मिलने जाना, बातचीत करके वहीं के वहीं उनके मन का समाधान कर देता हूँ। अब, वे जब यहाँ आएँगे तो उन्हें समाधान रहेगा।

प्रश्नकर्ता : आप किसी व्यक्ति का मन कैसे साफ करते हैं?

दादाश्री : मैं तो वहाँ जाकर सिर्फ प्रतिक्रमण ही नहीं करता, वहाँ जाकर सभी तरह से बातचीत करके उसका सबकुछ साफ करके फिर वापस आ जाता हूँ।

प्रश्नकर्ता : क्या बातचीत करते हैं?

दादाश्री : कि 'भाई, मेरी भूल हो गई है और अब, हमें मोक्ष में जाना है, तो इस झंझट में क्यों पड़ते हो? हमें उससे क्या लेना-देना है।' उसका मन खुश कर देते हैं।

प्रश्नकर्ता : आप उसका मन एक्ज़ेक्ट पढ़ पाते हैं? उसका मन क्या-क्या कहता है, उसे आपको पढ़ना आता है।

दादाश्री : हाँ-हाँ, सब समझ जाता हूँ। वहाँ उसके पास जाकर कर आता हूँ और वापस यहाँ आ जाता हूँ। जाकर वापस आ जाता हूँ। उसका साफ हो जाता है। तब यहाँ आते ही जब वह मुझे देखता है तो उसे सबकुछ साफ ही दिखाई देता है।

प्रतिक्रमण के पीछे अभेदता का सिद्धांत

प्रश्नकर्ता : कल आपने पूरी रात प्रतिक्रमण किए, उसके पीछे कौन-सा प्रिन्सिपल(सिद्धांत) काम करता है?

दादाश्री : अभेदता का। इन पच्चीस सौ लोगों के साथ अभेद था। इन पच्चीस सौ के साथ ही नहीं, पूरे शहर के साथ अभेद था। बावजूद इसके कोई आँखे दिखाकर चला गया। कोई दर्शन करके भी जाता है। वह प्रेम सभी जगह देखा तूने! जैसा कृष्ण भगवान के समय में था, वैसा प्रेम! गोपियों में प्रेम नहीं उभरा था! निरावृत आत्मा चला बैठे, बैठे, बैठे! निरावृत आत्मा, देह रहित आत्मा चला, बीच बाज़ार!! और देखो आनंद, आनंद और आनंद में ही थे सभी लोग!

उसमें भी फिर पक्षपात तो रहता ही है! नीरु बहन आईं, 'यहाँ बैठो। वहाँ इन भाई को बैठाओ,' इन भाई को यों बैठाते हैं। वापस कुछ

बड़े लोगों को ज़रा बड़े-बड़े हार पहनाते हैं। ये बड़े लोग, इन्हें भी हार पहनाना पड़ा!

प्रश्नकर्ता : तब क्या मन वापस ऐसा सब बताता है?

दादाश्री : हाँ, उनके मन से एडजस्ट करके काम लेते हैं।

प्रश्नकर्ता : और आपका मन?

दादाश्री : हमारा मन तो बताता है कि इसे हार पहनाना है। फिर उनके मन से एडजस्ट (सेटिंग) करके फिर उन्हें पहनाते हैं। हम समझ जाते हैं कि इनके मन में यह स्थिति उत्पन्न हुई है, उसके साथ एडजस्ट करते हैं। तब वह बहुत, खुश हो जाता है। वह हार इतना बड़ा था न! ऐसा किसी को नहीं पहनाया था। वे भाई खींच रहे थे और मैं दबाकर रख रहा था। फिर ये भाई आए तो तुरंत ही मैंने निकाल दिया! मुझे इन भाई को पहनाना था या भले आदमी को। ऐसे लोगों को बैठने के लिए जगह नहीं थी, हमें व्यवस्था की वह थोड़ी बहुत भूल तो देखनी पड़ेगी? नहीं देखनी पड़ेगी?

प्रश्नकर्ता : आज आपने इन्हें हार पहनाया तो उनके मन की स्थिति में आपने क्या पढ़ा?

दादाश्री : वह तो लगभग कितने ही दिनों से उनके मन की स्थिति इकट्ठी करने के बाद किया।

प्रतिक्रमण करके स्व-सत्ता का अनुभव करे

प्रश्नकर्ता : प्रतिक्रमण करने से सामने वाले को पहुँचता है?

दादाश्री : सामने वाले व्यक्ति को पहुँचता है। वह नरम होता जाता है। उसे पता चले या ना चले, अपने प्रति उसका जो भाव है, वह नरम होता जाता है। अपने प्रतिक्रमण तो बहुत प्रभावकारी हैं। यदि एक घंटे तक करो तो सामने वाले में बदलाव आ जाता है, यदि अच्छी तरह से हुए हों तो।

हम जिनके प्रतिक्रमण करते हैं उन्हें हमारे लिए कुछ खराब तो नहीं रहता लेकिन सम्मान होने लगता है। प्रतिक्रमण हो जाने पर चाहे कितना भी पुराना बैर हो, फिर भी इसी जन्म में छूट जाता है। यही एकमात्र उपाय है।

आपको तो प्रतिक्रमण कर लेना है। तब फिर आप जवाबदेही में से छूट जाओगे। शुरू-शुरू में सब लोग मुझ पर 'अटैक' करते थे न? लेकिन बाद में सब थक गए। यदि उसमें हम आक्रमक हो जाएँ तो सामने वाले नहीं थकते। यह जगत् किसी को भी मोक्ष में जाने दे, ऐसा नहीं है। ऐसा बुद्धि वाला जगत् है। इसमें से सावधान रहकर चले, समेटकर चले तो मोक्ष में जा सकता है।

ये प्रतिक्रमण करके तो देखो! फिर आपके घर के लोगों में सभी में चेन्ज हो जाएगा, जादुई चेन्ज हो जाएगा। जादुई असर!

प्रश्नकर्ता : आपने मुझे प्रतिक्रमण दिया था, जब यह पैर वैसा हो गया था न, तब। दो दिनों में उससे बहुत जादुई असर हो गया था, उस प्रतिक्रमण से?

दादाश्री : जादुई असर है यह हमारा। यदि आज्ञा अनुसार प्रतिक्रमण करे तो जितना काम भगवान नहीं कर सकते, उतना यह कर सकता है।

यदि एक घंटा प्रतिक्रमण किया जाए तब भी स्व-सत्ता का अनुभव होता है। ऐसा है कि जिससे तुरंत ही नकद प्रतिक्रमण हो जाएँगे, वह भगवान पद में आ जाएगा!

जय सच्चिदानंद

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

14-16 जून : पूज्यश्री की अमरीका सत्संग यात्रा की शुरुआत दक्षिण अमरीका के अर्जेन्टीना के इगुअजु शहर से हुई। अर्जेन्टीना में पहली बार पूज्यश्री के सत्संग कार्यक्रम आयोजित हुआ। 13 तारीख को महात्माओं ने पूज्यश्री का हार्दिक स्वागत किया। पूज्यश्री के साथ महात्माओं को इन्फॉरमल वक्त बिताने का मौका मिला जहाँ पर महात्माओं ने पूज्यश्री के साथ सुप्रसिद्ध इगुअजु फॉल्स देखा और वहीं पर पार्क में साथ में भोजन किया। पूज्यश्री का सत्संग अंग्रेज़ी में हुआ जिसका अर्जेन्टीना के महात्माओं द्वारा स्पेनिश और ब्राज़ील के महात्माओं द्वारा पोर्तुगीज भाषा में अनुवाद किया गया। दि. 15 को आयोजित ज्ञानविधि में 250 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। जिसमें से 70 मुमुक्षु ब्राज़ील से आए हुए थे। स्थानीय महात्माओं ने पूज्यश्री के साथ मोर्निंग वॉक, गरबा व इन्फॉरमल सत्संग का लाभ लिया। पूज्यश्री के दर्शन व व्यक्तिगत मार्गदर्शन के लिए 'दादा दरबार' का आयोजन हुआ।

17-20 जून : ब्राज़ील के साओ पोलो शहर में दूसरी बार पूज्यश्री के सत्संग का आयोजन हुआ। स्थानीय महात्माओं के लिए यहाँ पर भी अंग्रेजी, स्पेनिश व पोर्तुगीज भाषा में सत्संग का अनुवाद किया गया। 'प्रतिक्रमण' पुस्तक पर पारायण हुआ जिसमें स्थानीय महात्माओं द्वारा आत्मा व प्रतिक्रमण से संबंधित प्रश्न पूछे गए जिनके जवाब से महात्माओं ने अपनी ज्ञान पिपासा बुझाई। आप्तपुत्र द्वारा भी अक्रम विज्ञान का परिचय देता हुआ बेसिक सत्संग हुआ। 18 तारीख को आयोजित ज्ञानविधि में 290 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया।

21-23 जून : कनाडा के टॉरोंटो शहर में तीन दिवसीय सत्संग व ज्ञानविधि कार्यक्रम आयोजित हुआ। सत्संग में कनाडा के विविध शहरों के महात्मा व मुमुक्षुओं ने हिस्सा लिया। अमरीका से निकलकर पूज्यश्री सुबह जल्दी एयरपॉर्ट पहुँचे थे वहाँ पर कनाडा के महात्माओं ने पूज्यश्री का हार्दिक स्वागत किया। टॉरोंटो के शांत रमणीय व अध्यात्मिक वातावरण वाले शृंगेरी मंदिर के हॉल में सत्संग का आयोजन हुआ। 21 तारीख को पूज्यश्री से महात्माओं ने खुद के ज्ञान की प्रगति में बाधक कारण जानकर उनसे कैसे छूटें और ज्ञान में प्रगति कर सकें, उसके लिए चाबियाँ प्राप्त की। दि. 22 को महात्माओं को व्यक्तिगत मर्गादर्शन मिल सके, उसके लिए दादा दरबार का आयोजन किया गया। शाम के सत्संग में लगभग 700 महात्मा उपस्थित थे। 23 तारीख को सवेरे आप्तपुत्र द्वारा आत्मज्ञान के बारे में बातें हुई। शाम को ज्ञानविधि में लगभाग 200 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। मोन्ट्रियल सिटी में आप्तपुत्र सत्संग का आयोजन हुआ जिसका लाभ महात्मा व मुमुक्षुओं ने उठाया।

1-2 जुलाई : फ्लोरिडा के टेलहासी शहर में पहली बार पूज्यश्री के सानिध्य में दो दिवसीय सत्संग व ज्ञानविधि का आयोजन हुआ। आसपास के शहरों से महात्मा भी लंबा सफर करके इस कार्यक्रम के लिए आए। बहुत सारे स्थानीय लोग 'सेल्फ रियलाइज़ेशन' की अनुभूति के लिए तत्पर थे। पूज्यश्री के सहज व सरल व्यवहार से स्थानीय महात्मा बहुत प्रभावित हुए। पहले दिन आत्मज्ञान से संबंधित सत्संग हुआ। दूसरे दिन आयोजित ज्ञानविधि में लगभग 100 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया।

8-9 जुलाई : डे मोइन्स (आयोवा) में पहली बार पूज्यश्री के दो दिवसीय सत्संग व ज्ञानविधि का आयोजन हुआ। पूज्यश्री से मिलने के लिए स्थानीय महात्मा बहुत उत्सुक व आनंदित थे। दि. 8 को पूज्य नीरूमाँ के 51वें ज्ञानदिन महोत्सव के दिन विशेष भक्ति का आयोजन हुआ। पूज्यश्री द्वारा भी पद गाया गया। सत्संग व ज्ञानविधि का लाभ 275 से भी ज़्यादा लोगों ने प्राप्त किया। बहुत सारे मुमुक्षु पहली बार ही सत्संग में आए थे। आत्मज्ञान के बारे में जानकर बहुत प्रभावित हुए और अगले दिन आत्मज्ञान प्राप्ति के लिए आए। 9 तारीख को आप्तपुत्र सत्संग में ज्ञानविधि से संबंधित सामान्य बातें समझाई गई। शाम को लगभग 100 मुमुक्षु आत्मज्ञान प्राप्त करके कृतार्थ हुए ।

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

सातारा **दिनांक : 7 सितम्बर** **समय :** सुबह 10 से 1 **संपर्क :** 7722051313
स्थल : आदर्श अपार्टमेंट, 929 शनिवार पेठ, भावे सुपारी जवळ, सातारा.

सातारा **दिनांक : 7 सितम्बर** **समय :** शाम 5-30 से 7-30 **संपर्क :** 7722051313
स्थल : प्लाट नं 176 क/2ब कारंजे तुर्फ, रामकुंड, बेगर होम जवळ, सातारा.

कराड **दिनांक : 8 सितम्बर** **समय :** सुबह 9-30 से 12-30 **संपर्क :** 7588683603
स्थल : मंगळवार पेठ, नगरपालिका शाळा न 9, जोतिबा मंदिरा जवळ, कराड.

कोल्हापूर **दिनांक : 8 सितम्बर** **समय :** शाम 6 से 8-30 **संपर्क :** 7972026385
स्थल : हाउस नंबर -2100, दत्त मंदिर के सामने, रेणुका अपार्मटमेन्ट के पास, महाडीक कॉलोनी, कोल्हापुर.

कोल्हापूर **दिनांक : 9 सितम्बर** **समय :** सुबह 9-30 से 12-30 **संपर्क :** 9403787776
स्थल : श्री राधा कृष्ण मंदिर, दूसरी गली, शाहूपुरी, कोल्हापुर.

इचलकरंजी **दिनांक : 9 सितम्बर** **समय :** शाम 4-30 से 7 **संपर्क :** 9762407419
स्थल : महेश क्लब, राधाकृष्ण सिनेमा के पास, इचलकरंजी.

सांगली **दिनांक : 10 सितम्बर** **समय :** दोपहर 3 से 6 **संपर्क :** 9423870798
स्थल : सिद्धराज एंटरप्राइज, कुची रोड, कवठे, महाकाल.

सोलापुर **दिनांक : 11 सितम्बर** **समय :** शाम 4 से 7 **संपर्क :** 9284188494
स्थल : गुजराती भवन (गुजराती मित्र मंडल), पुरानी पोलिस लाइन, मुरारजी पेठ, सोलापुर.

बारामती **दिनांक : 12 सितम्बर** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9766680152
स्थल : के.एस.सर फार्म हाउस; पोस्ट-काहाटी, बारामती.

झारखंड

टाटानगर दि : 11 **अक्तुबर** **संपर्क :** 9931538777
राँची दि : 12-13 **अक्तुबर** **संपर्क :** 8092543226

उड़ीसा

कटक दि : 12 **अक्तुबर** **संपर्क :** 8480800788
भुवनेश्वर दि : 13-14 **अक्तुबर** **संपर्क :** 8763073111
नेम्पो दि : 15 **अक्तुबर** **संपर्क :** 9658559559

त्रिपुरा तथा आसाम

उदयपुर दि : 11-12 **अक्तुबर** **संपर्क :** 9436902835
गुवाहाटी दि : 13-14 **अक्तुबर** **संपर्क :** 7002847355
बक्सा दि : 15 **अक्तुबर** **संपर्क :** 9678358534

मध्यप्रदेश

उज्जैन दि : 13 **अक्तुबर** **संपर्क :** 9425915633
इन्दौर दि : 14-15 **अक्तुबर** **संपर्क :** 6354602400
अंजड़ दि : 16 **अक्तुबर** **संपर्क :** 9617153253
खरगोन दि : 17 **अक्तुबर** **संपर्क :** 9425643302
भोपाल दि : 19-20 **अक्तुबर** **संपर्क :** 9425190511

बंगाल

एठेल्बरी दि : 16-17 **अक्तुबर** **संपर्क :** 9382899417
कोलकाता दि : 17-20 **अक्तुबर** **संपर्क :** 9830080820

बिहार

पूर्णिया दि : 18 **अक्तुबर** **संपर्क :** 9546817581
कटिहार दि : 19 **अक्तुबर** **संपर्क :** 9931825351
मुजफ्फरपुर दि : 20 **अक्तुबर** **संपर्क :** 9608030142
पटना दि : 20-21 **अक्तुबर** **संपर्क :** 7352723132
लालगंज दि : 21 **अक्तुबर** **संपर्क :** 99534852489

कर्णाटक

बेंगलुरु दि : 9-16 **सितम्बर** **संपर्क :** 9590979099

समय और स्थल की जानकारी के लिए उपर दिए गए नंबर पर संपर्क करे।

Atmagnani Pujya Deepakbhai's Dubai-Kenya Satsang Schedule 2019							
Date	Day	City	Session	From	To	Venue	Contact No. & Email
9 Oct	Wed	Dubai	Satsang	07:00 PM	09:30 PM	Grand Excelsior Hotel , Kuwaiti Street, Bur Dubai, Mankhool, Dubai, UAE	971-557316937 971-501364530 dubai@ae.dadabhagwan.org
10 Oct	Thu	Dubai	Satsang	07:00 PM	09:30 PM		
11 Oct	Fri	Dubai	Gnanvidhi	05:00 PM	08:30 PM		
12 Oct	Sat	Nairobi	Aptputra Satsang	07:30 PM	09:00 PM	Sarit Centre Exhibition Hall, Pio Gama Pinto Road, Westlands, Nairobi	+254 733923232 +254 795923232 info.ke@.dadabhagwan.org
13 Oct	Sun	Nairobi	Aptputra Satsang	11:00 AM	12:30 PM		
13 Oct	Sun	Nairobi	Gnanvidhi	04:30 PM	07:00 PM		
14 Oct	Mon	Nairobi	Satsang	07:30 PM	10:30 PM		
18 Oct	Fri	Mombasa	Satsang	07:30 PM	10:00 PM	Hare Krishna Mandir Nyali Road, Mombasa	+254 733923232 +254 795923232 info@ke.dadabhagwan.org
19 Oct	Sat	Mombasa	Gnanvidhi	04:30 PM	07:00 PM		

भारत में पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शनि सुबह 8-30 से 9, रवि सुबह 6-30 से 7
- **'दूरदर्शन '-मध्यप्रदेश** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ शाम 6-30 से 7 तथा सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर शनि से बुध रात 9-30 से 10 (हिन्दी में)
- **'उड़ीसा प्लस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)
- **'दूरदर्शन'-चंदना** पर सोम और शुक्र रात 7-30 से 8 (कन्नड़ में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन'-गिरनार** हर रोज़ पर सुबह 9 से 9-30 तथा हर रोज़ रात 10 से 10-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह 3-30 से 4-30, दोपहर 2-30 से 3 तथा रात 8 से 9 (गुजराती में)

USA-Canada
- **'Rishtey-USA'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा 8 से 8-30 (हिन्दी में) EST
- **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)
- **'Rishtey-UK'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 Western European Time (6am-6-30am GMT)
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)

CAN-Fiji-NZ-Sing.-SA-UAE ✦ **Rishtey-Asia'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा 8 से 8-30 (हिन्दी में) EST

USA-UK-Africa-Aus. ✦ **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30

'दादावाणी' के सभी सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महिने 15वी तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को 'दादावाणी' पत्रिका विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे पूर्व प्राप्त पत्रिका के कवर पर अपना नाम, पता, पीनकोड आदि जाँच कर लें। यदि उसमें कोई भूल हो तो आपका ग्राहक नं, पूरा नाम-पता, पीनकोड के साथ लिखकर मोबाईल नं. 8155007500 पर SMS करें। आप अडालज त्रिमंदिर के पते पर पत्र से या dadavani@dadabhagwan.org इ-मेइल आइडी पर इ-मेइल से भी सूचित कर सकते हैं। जिससे आपकी यहाँ दर्ज की गई जानकारी में सुधार किया जा सके। यदि आपको दादावाणी का अंक न मिले तो उपर दिए गए कोई भी माध्यम से हमें सूचित करें। यदि अंक स्टोक में होगा तो आपको फिर से भेजा जाएगा।

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

अडालज त्रिमंदिर

24 अगस्त (शनि) – रात 9 से 12-15 – **जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष भक्ति कार्यक्रम**

25 अगस्त (रवि) सुबह 11 से 1 तथा शाम 5 से 7-30 – **पूज्यश्री के दर्शन का कार्यक्रम**

26 अगस्त से 2 सितम्बर (सोम से सोम) – **पर्युषण पर्व- आप्तवाणी 14 (भाग-1)** (पेज -40 से) **सत्संग पारायण**

सुबह 10 से 12-30, शाम 4-30 से 6-45 – **सत्संग-सामायिक**

सूचना : पारायण में भाग लेने के लिए अपने नज़दिकी सेन्टर में और अगर नज़दिक में कोई सेन्टर नहीं है, तो अडालज त्रिमंदिर के रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. 9924348880, 9328661144 (सुबह 9-30 से 12 तथा दोपहर 3 से 6) पर अपना रजिस्ट्रेशन करवाएँ।

दिल्ली

13-14 सितम्बर (शुक्र-शनि) शाम 5-30 से 8-30 – **सत्संग** तथा **15 सितम्बर** (रवि) शाम 5 से 8-30 – **ज्ञानविधि**

स्थल : तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम, नई दिल्ली. **संपर्क :** 9811332206

बंगलौर

17 सितम्बर (मंगल) शाम 5-30 से 8-30 – **सत्संग** तथा **18 सितम्बर** (बुध) शाम 5-30 से 9 – **ज्ञानविधि**

19 सितम्बर (गुरु) शाम 5-30 से 8 – **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : बेंगलोर पाटीदार समाज, पीन्या, 8 हेसरघाट्टा मेईन रोड, बागलकुंटे. **संपर्क :** 9590979099

पूणे

20-21 सितम्बर (शुक्र-शनि) शाम 5-30 से 8-30 – **सत्संग** तथा **22 सितम्बर** (रवि) शाम 5 से 8-30 – **ज्ञानविधि**

स्थल : गणेश कला क्रिडा मंच, नेहरु स्टेडियम के पास, स्वारगेट बस स्टेशन. **संपर्क :** 7218473468

23 सितम्बर (सोम) शाम 5-30 से 8 – **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : स्वयंवर मंगल कार्यालय, 695/3/27, पूणे-सतारा रोड, आदिनाथ सोसायटी के पास, पूणे.

दादाश्री की 112वीं जन्मजयंती तथा मुंबई त्रिमंदिर प्राणप्रतिष्ठा का महोत्सव

7 नवम्बर (गुरु) सुबह 10 से 12-30 – **सत्संग,** शाम 6-30 से 8 – **महोत्सव शुभारंभ,** शाम 8 से 9 – **सत्संग**

8 से 10 नवम्बर (शुक्र-रवि) सुबह 9 से 12 – **प्राणप्रतिष्ठा,** शाम 6-30 से 9 – **सत्संग**

11 नवम्बर (सोम) सुबह 8 से 1 तथा शाम 5 से 8 – **जन्मजयंती के अवसर पर पूजन-दर्शन-भक्ति**

12 नवम्बर (मंगल) सुबह 11 से 12-30 – **आप्तपुत्र सत्संग,** शाम 5-30 से 9 – **ज्ञानविधि**

त्रिमंदिर स्थल : त्रिमंदिर, ऋषिवन, अभिनवनगर रोड, ला-विस्टा बिल्डींग के पास, काजुपाडा, बोरीवली (ईस्ट).

महोत्सव स्थल : BMC ग्राउन्ड, चीकुवाडी, सेईन्ट रोक कोलेज के सामने, बोरीवली (वेस्ट). **संपर्क :** 9323528901

सूचना : 1) इस महोत्सव में भाग लेने हेतु आपको AKonnect app पर अथवा अपने नजदिकी सत्संग सेन्टर पर और यदि आपके नजदिक में कोई सत्संग सेन्टर नहीं है, तो आपको अडालज त्रिमंदिर रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. 9924348880, 9328661144 (सुबह 9 से 12 तथा 2 से 7 के दौरान) पर 2 सितम्बर 2019 तक रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। 2) ओढ़ने-बीछाने का चद्दर, एयर पीलो, बेटरी, जरूरी दवाईयाँ साथ में लाएँ। 3) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्ट आई-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ। 4) प्राणप्रतिष्ठा त्रिमंदिर स्थल पर रहेगी और बाकी के सभी कार्यक्रम महोत्सव स्थल पर होगे।

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 9328661166, 9328661177, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **गोधरा :** 9723707738, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9328661188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा:** 9574001557, **जामनगर :** 9924343687 **अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद:** (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर)** : 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830080820

यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

अगस्त 2019
वर्ष-14 अंक-10
अखंड क्रमांक - 166

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
LPWP Licence No. PMG/HQ/036/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

सामने वाले तक पहुँचते हैं यथार्थ प्रतिक्रमण

प्रतिक्रमण करें तो सामने वाले व्यक्ति को पहुँचता ही है। उसे पता चले या न चले, अपनी ओर का उसका भाव नरम होता जाता है। इस प्रतिक्रमण में तो बहुत असर है। एक घंटा यदि करो तो सामने वाले में बदलाव आ जाता है, यदि अच्छी तरह से हुए होंगे तो। जहाँ पर हम जिनके प्रतिक्रमण करते हैं तो वे हमारे दोष तो नहीं देखते लेकिन हमारे लिए उनमें आदर भाव आ जाता है। निजस्वरूप की प्राप्ति के बाद यथार्थ प्रतिक्रमण होते हैं। यदि एक घंटा प्रतिक्रमण किया जाए तब भी स्वसत्ता का अनुभव होता है। यदि तुरंत ही नकद 'प्रतिक्रमण' हो जाए, तो भगवान पद में आया जा सकता है! अतिक्रमण से यह हुआ है और प्रतिक्रमण से इसका नाश होता है! जैसे-जैसे नकद प्रतिक्रमण होता जाएगा, वैसे-वैसे साफ होता जाएगा। अतिक्रमण के सामने यदि हम नकद प्रतिक्रमण करेंगे तो मन व वाणी शुद्ध होते जाएँगे।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B-99, GIDC, Sector-25, Gandhinagar - 382025.